कल्कि अवतार

हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में

खुर्शीद अहमद प्रभाकर, दर्वेश,
क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, भारत

मिलने का पता
नज़ारत नश्रो इशाअत
सदर अन्जुमन अहमदिय्या, क़ादियान
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, भारत
पिनकोड - 143516

- पुस्तक -

कल्कि अवतार
हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में

- लेखक -

खुर्शीद अहमद प्रभाकर दुर्वेश

- प्रकाशक -

नज़ारत नश्रो इशाअत क़ादियान- 143516

प्रथम संस्करण- 2005 ई.
संख्या – 5000

- प्रेस -

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान

ISBN - 81-7912-077-5

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده و نصلي على رسوله الكريم و على عبده المسيح الموعود

विषय सूची

हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में
''कल्कि अवतार अहमद''

संसार भर के विभिन्न धर्मों के आधारभूत ग्रन्थों में कलियुग में प्रकट होने वाले कल्कि अवतार का उल्लेख मिलता है । साथ ही उस के सुन्दर, सुनहरे, श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण कारनामों और कामों का उल्लेख भी मिलता है । उसके ''अहमद'' नाम होने में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की पुस्तकों में सहमति पाई जाती है ।

अवतारवाद अथवा रिसालते जारिया

विश्व भर के सभी धर्मों, जैसे पारसी धर्म (ईरान), हिन्दू धर्म, मुसलमान, सिक्ख, बौद्ध, इसाई, यहूदी धर्मों वाले कहते हैं कि कलियुग में एक अवतार, सुधारक व मुस्लेह प्रकट होगा, जो सब जातियों का सांझा, वैश्वानरस्य, जगत गुरू होगा । जो समस्त जातियों को तथा सब धर्मों के अनुयायियों को एक स्थान पर तथा एक ही सत्यधर्म पर ला इकट्ठा करेगा । सब में अदल-न्याय और एक विश्व-व्यापि भाई-चारा Universal brotherhood और मसावात एवं अमन व शान्ति स्थापित कर देगा । इस प्रकार मानव मात्र प्रेम से जीवन व्यतीत कर सकेंगे तथा समाज स्वर्ग बन जायेगा ।

श्रीमद् भगवत गीता

हिन्दुओं में से प्रादुर्भूत होने वाले भारत के सब से बड़े अवतार श्री कृष्ण जी महाराज ने सिद्धान्तिक रूप में स्पष्ट शब्दों में अवतार वाद या रिसालते जारिया के जारी रहने का उपदेश दिया है ।

आप ने श्रीमद् भगवत गीता में मानव मात्र को सत्य संदेश दिया है कि :-

''यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।
अभियुत्था नम् धर्म मस्य तदात्मानं सृजाम्य हम् ।।''

(श्रीमद् भगवद गीता, अध्याय नं. 4, श्लोक नं. 7)

शाब्दिक अर्थ :- भारत ! हे अर्जुन, यदा, जिस+यदा, जिस काल, ज़माने में+ धर्मस्य= धर्म की ग्लानि= हानि, कमी + भवति = होती है । अधर्मस्य = अधर्म, बे दीनी की + अभ्युत्यानम् = अधिकता, बेशी होती है । तदा,तिस, उसी, काल (ज़माने) में ही, अहम् = मैं । आत्ममानम = अपनी आत्मा (अवतार) को । सृजामि = प्रकट करता हूँ । (अवतार लेता हूँ) ।

अर्थ - "हे अर्जुन ! जिस काल (ज़माने) में धर्म की हानि (त नज़्ज़ुली) होती है, और अधर्म (बेदीनी) की अधिकता होती है । तिसी काल में ही मैं अपनी आत्मा (अवतार, पैग़म्बर) को प्रकट करता हूँ ।"

(मुमुक्षु भाष भगवत् गीता अध्याय नं. 4, श्लोक नं. 7, पृ. नं. 2007)

हुआ करती है जब, धर्म की कमी ।
हो पापों की बेशी, हे भारत तभी ।।
अयाँ करता हूँ अपनी, जिन आत्मा ।
जो कहलाता अवतार है बरमला ।।

(मुमुक्ष भाष भगवत् गीता पृ. नं. 201, अनुवादक- मुन्शी छुट्टन लाल कलेक्टर उदयपुर)

गीता के 4:7:8 के श्लोकों का अनुवाद दिल की गीता में इस प्रकार किया गया है :

तनज़्ज़ुल पे जिस वक़्त आता है धर्म ।
अधर्म आ के करता है बाज़ार गर्म ।।
यह अंधेर जब देख पाता हूँ मैं ।
तो इन्साँ की सूरत में आता हूँ मैं ।।

(दिल की गीता, अध्याय नं. 4, पृ. 121, श्लोक, 7-8)

शहिन्शाह अकबर के दरबार के कवि फ़ैज़ी

फ़ैज़ी ने पूरी गीता का फ़ारसी में अनुवाद किया है । श्रीमद् भगवत् गीता के अध्याय नं. 4:7:8 का अनुवाद देखिये :-

चूँ बुन्याद दीं सुस्त गरदद बसे ।
नुमायम् ख़ुद रा ब्शक्ले कसे ।।

अर्थात् "जब धर्म की नीव कमज़ोर पड़ जाती है, तो मैं संसार में मानव रूप में अपने आप को प्रकट करता हूँ (अवतार लेता हूँ) ।"

"कि हिफ़ज़े रियाज़त गज़ीनाँ कुनम् ।
मुराआत उज़लत् नशीनाँ कुनम् ॥"

अर्थात् "ताकि मैं उपासना करने वालों की रक्षा करूँ और एकान्त में, मुराक़बा, में बैठे ध्यान मग्न साधु जनों की मुरादें पूरी करूँ । (फ़ैज़ी) ।

श्री भगवत् गीता के संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं । गीता के 4:7:8 श्लोकों का अनुवाद यही किया गया है कि घोर पापों भरे काल में श्री कृष्ण जी महाराज अवतार धारण करके संसार में सत्य धर्म की उन्नति के लिए प्रकट होते हैं ।

"अहमद नाम" कल्कि पुराण के अनुसार कलियुग में वह अहमद नाम से प्रकट होंगे । कल्कि पुराण बाब नं. 2, अध्याय नं. 1 श्लोक नं. 47, 48 पृ. नं. 48 अनुवादक हरदयाल शर्मा, प्रकाशक - पं. ईश्री परसाद, मनेजर, समाचार पत्र भारत वासी, सदर बाज़ार मेरठ, सन् 1897 ई. ।

श्री कृष्ण महाराज ने श्रीमद् भगवत् गीता के रूप में संसार को नवीन ज्ञान दिया । उसी का प्रचार किया, तथा कल्कि अवतार "अहमद" और नवीन ज्ञान की शुभ ख़ुश्ख़बरियाँ दीं :- क्योंकि;

"न वेद, जप से मिल सके न, दान तप से मिल सके ।
न जग, न कर्म काँड से, दिखाई दे सके हरी ॥"

(श्रीमद भगवत् गीता, 11:48, 1 दिल की गीता, पृ. 232)

पवित्र ग्रन्थों में यह भी लिखा हुआ है कि कलियुग में श्री कृष्ण जी महाराज का प्रादुर्भाव 'अहमद' नाम से होगा । गुरू नानक देव जी महाराज ने भी कहा है कि "पर जामाँ उसका मुसलमानी होगा ।" (जन्म साखी विडी, भाई बाला जी)

वह अहमद दुष्टों, आतन्कवादियों, आततायियों, पापियों, का सुधार तथा सर्वनाश, करेगा । साधु स्वभाव लोगों की रक्षा करेगा ।

(श्रीमद भगवत् गीता, प्रतीक नं. 7-8 अध्याय नं. 4)

धार्मिक ग्रन्थों से स्पष्ट है कि श्री कृष्ण जी महाराज के चौबीसवें अवतार

(मसील, मज़्हर) मानवरूप में प्रकट होंगें) मानव रूप में प्रकट होने वाले कृष्ण स्वरूप अवतारों में से 1. श्री परशु राम 2. राम अवतार 3. कृष्ण अवतार, 4. बुद्ध अवतार अधिक प्रसिद्ध हैं ।

(कल्कि पुराण बाब नं. 2, अध्याय नं. 1, पृ. नं. 56 से 58 तक । सादिक़ उल् मुताबि, सद्र मेरठ, 1897 ई.)

वेदों में 'अहमद' अथर्ववेद

हिन्दू धर्म का आधार वेदों पर माना जाता है । अथर्ववेद, साम वेद, ऋगवेद, तीनों वेदों में एक ऐसे ऋषि के प्रादुर्भाव का उल्लेख और सविस्तार वृत्तान्त मिलता है, जो अपने से पूर्व समय में हुए एक पुरुषोत्तम महर्षि, अवतार श्रोमणी की अध्यक्षता करने वाला, उसका आध्यात्मिक सुपुत्र होगा । जिस का विवरण कुछ इस प्रकार है ।

अथर्ववेद, कांड 20, सूक्त नं. 115 मंत्र नं. 1,

ऋषि-वत्स, देवता इन्द्र, छन्द गायत्री ।

अहमिद्धि पितुष्परि मेधा मृतस्य जग्रभ ।

अहं सूर्य इवाजिनि ॥

(साम वेद, 2:6:8, ऋग्वेद 8, 97)

शाब्दिक अर्थ : अथर्ववेद : 20:115:1 अहमद = अहमद ने, धि=निश्चय ही । द्धि = समझ से, बुद्धि से । पितु= अपने पिता से । मेधाम = मेधा से, अक़ल व समझ व बुद्धि से । ऋतस्य = ऋत की विधि । ज्ञान से भरपूर, सत्यज्ञान कानूने शरीअत The Holy Law सार गर्भित सत्यज्ञान जग्रभ = पूरी तरह से, पूरे का पूरा । पूरी शक्ति से, धारण करना । अँह = मैं । सूर्य = सूरज, इव = की तरह, समान, (मज़्हर मसील) जनि = पैदा हुआ हूँ ।

अनुवाद : अहमद ने ही पूरी अकल-समझ से पूरी शक्ति से पवित्र सत्यज्ञान, क़ानूने शरीअत को अपने (आध्यात्मिक) पिता से प्राप्त किया (कहा) कि मैं इस से सूर्य, सूरज जैसा पैदा हुआ हूँ ।''

इस मन्त्र के शब्द 'अहमद' का अर्थ हिन्दू भाष्यकारों ने ''मैं'' किया

है। जैसे 1. पं. श्री राम शर्मा, आचार्य, बरेली, 2. पं. राजा राम लाहौर। 3. पं. क्षेम करण दास, वेद भाषकार, इलाहाबादी, 4. पं. त्रिलोक चंद शास्त्री, एडीटर, आर्या गज़ट जालन्धर, 5. पं. जै देव शास्त्री, 6. डा. गोकल चन्द नारंग, इन छः हिन्दु भाष्यकारों के अतिरिक्त दूसरे वेद भाषकारों 1. मौलवी अब्दुल हक़, विद्यार्थी लाहौर । 2. मौ. नासिरुद्दीन, काव्य तीर्थ, वेदभूषण, बनारस यूनिवर्सिटी, क़ादियान, 3. मौ. शम्स नवीद, रामपुर यू.पी. भारत ।

ने 'अहमद' शब्द का अर्थ 'अहमद' ही किया है । इसे उत्तम पुरुष (अलम) ठहराया है । उन्हों ने बताया है कि चारों वेदों में 'अहमद' का नाम 31 बार आया है। (अब भी अगर न जागे तो पृ. 100)

विविध विद्वानों के अनुवाद

1. पं. क्षेम करण दास, वेद भाषकार, इलाहबादी।

''मैं ने परमेश्वर से अवश्यी करके सत्य वेद की विधि सब प्रकार से पाई है । मैं सूरज के समान ''सिद्ध हुआ'' हूँ ।''

मन्त्र में संस्कृत शब्द जनि है, जिसका अर्थ है पैदा होना, इस शब्द का धातु ''जन'' है जिससे जनीन बनता है। (देखें पद्म चन्द्र कोश शब्द जन) पैदा होना, जनना, रिहम । रिहम का अर्थ है जिस में गर्भ पैदा होता व उपजता है और माँ, माता, इस शब्द का अर्थ ''सिद्ध होना'' नहीं होता ।

मंत्र में शब्द पितु है, जिस का अर्थ बाप या पिता है । इस शब्द का सनातन धर्मियों, आर्य समाजियों, मुसलमानों आदि विद्वानों ने जहाँ भी रब्ब, परमात्मा अथवा परमेश्वर अर्थ किया है, वह इस शब्द का असली अर्थ नहीं है । असली और ठीक शुद्ध अर्थ 'पिता या बाप' है ।

2. अनुवाद श्री पं. श्रीराम शर्मा, आचार्य, संस्कृत संस्थान, ख़्वाजा कुतुब घर बरेली, यू.पी. भारत।

''मैं सूर्य (की मानिन्द) जैसा हुआ हूँ और पिता ब्रह्म की बुद्धि को पा लिया है । (अथर्ववेद 20:115:1)

3. डा. गोकल चन्द नारंग एम.ए. ।

"I from my father have recived deep knowledge of the Holy law". (The message of Vedas)

4. पं. राजा राम जी, वेद भाष्यकार ।

"मैं ने पिता से ऋत की विधि को पकड़ा है । मैं सूर्य की तरह प्रकट होता हूँ ।"

5. पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री, एडीटर आर्या गज़ट जलन्धर, पंजाब, भारत ।

"मैं परम पिता परमात्मा से, सत् ज्ञान की विधि को धारण करता हूँ और मैं सूरज के समान तेजस्वी प्रकट हुआ हूँ ।"

6. पं. जयदेव जी, वेद भाष्यकार ।

"मैं ही केवल सत् ज्ञान और कानून का और पितु (बाप) की पवित्र सत्य संग कारिणी बुद्धि को सब प्रकार से ग्रहण करता हूँ । इसलिये मैं सूर्य के समान हो जाता हूँ । सारे अनुवाद 'वेदों में अहमद' पृ. 26-36 से लिये गये ।

7. मौलवी अब्दुलहक़ विद्यार्थी लाहौर ।

"अहमद ने ही अपने रब्ब से पूरी समझ से व अक़ल से पुरहिकमत शरीअत् को हासिल किया कि मैं इस से सूरज की मानिन्द रोशन हो रहा हूँ ।" (मीसाक़ुन्न बीय्यीन प्रथम भाग पृ. 110 मत्बुआ, एक्सपर्ट प्रिन्टिंग प्रेस लाहौर, 18 दिसम्बर सन् 1936 ई. ।

8. अनुवाद मौलाना नासिरुद्दीन काव्य तीर्थ, वेद भूषण बनारस यूनिवर्सिटी यू.पी. भारत ।

"वह ऋषि 'अहमद' होगा, जो अपने रूहानी बाप की सदाक़त को ही लेगा । इस लिये एक साथ वह कहेगा, मैं उस सदाक़त के बाइस सूरज जैसा पैदा हुआ हूँ । (वेदों में अहमद पृ. नं. 29, 10 मार्च. 1940, ई. अल्लाह बख़्श प्रिटिंग प्रेस, क़ादियान, पंजाब, भारत)

9. मौ. शम्स नवीद उसमानी, रामपुर, यू.पी. "शीर्षक हक़ीक़त अहमदी हर मुक़द्दस किताब में" है ।

"अथर्ववेद काण्ड नं. 20, सूक्त नं. 115, मत्र नं. 1 ऋग्वेद, मंडल

8, मन्त्र नं. 9, 10 ।

"अहमद वह हैं, जो लौटते हैं, तो रौशन, ताक़तवर राहबर साबित होते हैं... और बेहतरीन नजात दहिन्दा साबित होते हैं ।... अहमद ने पहली क़ुर्बानी दी और सूरज जैसा हो गया ।" (अब भी अगर न जागे तो.. पृ. 100)

शब्द 'अहमद' पर एक दृष्टि

ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद तीनों वेदों में 'अहमद' शब्द 31 बार आया है । अथर्ववेद 20:115 के केवल तीन ही मंत्र हैं । मन्त्र नं. 1 का सब से पहला शब्द 'अहमद' है । इस मन्त्र में दूसरी बार 'अहमद' के स्थान पर शब्द 'अहँ' सर्वनाम (Proper Noun) प्रयुक्त हुआ है । व्याकरण के नियंताओं, (मुक़न्नेनीन लिस्सानियात) के नियमों के अनुसार सब से पहले कर्ता प्रयुक्त हुआ करता है तथा दूसरी बार कर्ता के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुआ करता है । यह संसार भर की सभी भाषाओं का सांझा और आधारभूत नियम है । यह नियम सब का माना हुआ है कि संसार की कोई भाषा व्याकरण के बिना एक क़दम भी आगे नहीं चल सकती ।

अथर्ववेद 20:115 के पहले मन्त्र 1 का पहला शब्द अहमद कर्ता है । दूसरी बार अहमद के स्थान पर 'अह' सर्वनाम मौजूद है । 'अहं' सर्वनाम का प्रयोग बताता है कि सर्वनाम से पहले कोई न कोई कर्ता अथवा इस्म ज़ाहिर, संज्ञा प्रयुक्त हो चुका है तथा वह है 'अहमद' ।

आधारभूत सिद्धान्त

वेदों का अपना एक आधारभूत सिद्धान्त यह है कि :-

"एक सूक्त में एक से लेकर 58 तक और सामान्यत: 10 मन्त्र होते हैं, "प्रत्येक सूक्त अपने आप में पूर्ण है और उस में प्राय: एक ही देवता की स्तुति के मन्त्र हैं । उस का दृष्टा ऋषि भी प्राय: एक ही है । मन्त्रों में जिस देवता की स्तुति की गई है, वही उस का ऋषि है ।"

"ऋषियों ने अपने चतुर्दिक जो कुछ देखा, उसके प्रति अपने विचार इन मन्त्रों में व्यक्त किये हैं ।"

(भारतीय संस्कृति की रूप रेखा, पृ. 20 लेखक रामधन शर्मा, शास्त्री,

एम.ए. संस्कृत, एम.ए. हिन्दी प्रोफेसर बर्लिन यूनिवर्सिटी, जर्मन और सरन दास भनोत, एम.ए. हंसराज, कालेज, नई दिल्ली, प्रकाशक, मेहरचन्द लक्ष्मणदास । गली नन्हे खाँ, कूचा चेलां दरिया गंज, दिल्ली) ।

अत: ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में आये हुए ''अहमद'' शब्द का अर्थ अहमद के अतिरिक्त दूसरा हो ही नहीं सकता, यदि वेदों के अपने ही सिद्धान्तों के विरुद्ध हज़रत 'अहमद' के भय से इसका मनमाना अर्थ ''मैं'' निकाला जाय, तो तीनों वेद सदा के लिए कलंकित हो जाते हैं तथा वे यह दाग़ व त्रुटि और गम्भीर कलंक प्रलय तक अपने से दूर नहीं कर सकते एवं न ही कोई ईमानदार हिन्दू विद्वान इस कलंक को जन्म जन्मान्तर तक वेदों से धो सकता है ।

मुकन्नेनीन लिसानियात, भाषा-नियंता, व्याकरणकार

भाषा के नियम बनाने वाले व्याकरणकारों ने व्याकरण के सिद्धान्तों में एक पक्का नियम व सिद्धान्त यह निश्चित कर रखा है कि सर्वनाम (Proper Noun) के प्रयोग से पहले कोई न कोई कर्ता अवश्य ही मौजूद होता है तथा दूसरी बार कर्ता के स्थान पर सर्वनाम आता है ।

किसी वाक्य में सर्वनाम का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि उसके प्रयोग से पहले कोई न कोई कर्ता (अलम, इस्म ज़ाहिर) प्रयुक्त हो चुका है । संसार भर की भाषाओं में कर्ता, कर्म, सर्वनाम अनिवार्य, सिद्धान्त बन चुके हैं ।

इस कसौटी पर अथर्ववेद कांड 20, सूक्त, 115, इसके केवल तीन ही मन्त्र हैं) के मन्त्र नं. 1 को परखें :-

इस मन्त्र का कर्ता, मन्त्र का सबसे पहला शब्द ''अहमद'' मौजूद है । दूसरी बार 'अहमद' कर्ता के स्थान पर 'अँह' सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है । यह क्रम, वैदिक सिद्धान्तों, भाषा - नियताओं, व्याकरणकारों और मुकन्ननीन भाषा के सुदृढ़ नियमों के अनुसार है ।

एक चैलेंज 'अहमद' अथर्ववेद 20-115:1

हिन्दू विद्वानों ने अथर्ववेद के 20:115:1 के पहले मंत्र के पहले शब्द

अहमद (कर्ता) का अनुवाद 'अहँ' (सर्व नाम) किया है । उनके मनमाने अर्थ के लिये एक चुनौती है । "भारतीय संस्कृति की रूपरेखा पृष्ठ भूमि" में यह पक्का सिद्धान्त मौजूद है कि वेदों का हरेक सूक्त अपने आप में मुक्मल और परिपूर्ण होता है । उसे किसी बाह्यआश्रय की आवश्यकता नहीं होती ।

यदि भाषा के नियंताओं, व्याकरणकारों और भाषा के सारे नियमों के विरुद्ध 'अहमद' कर्ता शब्द का अर्थ 'मैं' सर्वनाम के तौर पर किया जाय, तो इस पर दो भयंकर आक्षेप और आरोप आते हैं कि :-

1. पहला आक्षेप इस मन्त्र का 'कर्ता' कौन है ?

2. दूसरे 'अँह' (सूर्य इवा, जनि) किस कर्ता; के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है । जबकि यह मन्त्र सिद्धान्तों के अनुसार अपने आप में मुक़म्मल है ।

सारे विद्वान इकट्ठे होकर महा प्रलय तक बैठे विचार करते रहें । तब भी जन्म जन्मान्तर तक 20.115:1 का कर्ता अहमद के अतिरिक्त कोई दूसरा ढूंढ नहीं पायेंगे ? तथा न ही 'अँह' सर्वनाम का कर्ता ? वेदों पर यह एक भयानक कलंक है जिसे कोई वेद हितैषी धो नहीं सकता इससे सारे वेद त्रुटि पूर्ण, संदेहास्पद होकर रह जाते हैं ।

शब्द अहँ और अहमद, एक चैलेंज

पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री एडीटर आर्या गज़ट जालंधर, ने शब्द अहमद और अँह में अन्तर स्पष्ट करते हुए पाणिनी जी की संस्कृत व्याकरण के आधार पर चैलेंज दे रखा है कि :

'मैं खुले शब्दों में चैलेंज करता हूँ कि किसी भी धर्म की पुस्तक को उस की व्याकरण के बिना एक शब्द का अर्थ कर दिखायें । व्याकरण के बिना कोई भाषा जीवित नहीं रह सकती । 'अहं' शब्द संस्कृत के सारे साहित्य में 'मैं' के अर्थों में आता है । चैलेंज है कि यह बात ग़लत कर दिखलाये । अहँ हमेशा 'मैं' के अर्थों में आता है । (वेदों में अहमद पृ. 10 व 22)

शब्द अहमद - अथर्ववेद, 20.115:1 'अहमद' शब्द अरबी भाषा का होने के कारण हिन्दू विद्वान समझ नहीं सके हैं । **यह शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा** (अलम) है तथा यहाँ कर्ता के रूप में **प्रयुक्त हुआ है** ।

आर्य समाज वाले अपने प्रारंभ से ही इस बात पर ज़ोर देते आ रहे हैं कि संस्कृत भाषा समस्त भाषाओं की जननी है तो अरबी भाषा की जननी भी संस्कृत ठहरी, तो अथर्ववेद 20.115 में शब्द अहमद के अरबी होने में आश्चर्य नहीं होना चाहिये ।

उसूल इन्शा परदाज़ी, लिखने की विधि

हिन्दी और संस्कृत के नियमों के अनुसार 'अहमद' तथा 'अहँ' में आकाश पाताल का अन्तर है । अहमद शब्द सिद्ध करता है कि निःसंदेह यह शब्द सर्वनाम नहीं अपितु इस स्थान में यह कर्ता और व्यक्ति वाचक संज्ञा के रूप में आया है ।

आज के हिन्दी युग में 'अहम्' 'अहँ' के रूप में लिखा जाता है तथा अहमद सदा ही 'अ ह म द' के रूप में लिखा जाता है और यह शब्द आज तक कभी भी सर्वनाम के लिये प्रयुक्त नहीं हुआ । यह शब्द सहस्र वर्षों से अथर्ववेद 20.115:1 से अपने असली रूप में प्रकाशमान है ।

अथर्ववेद के ऋषि और दाय या विरसा

अवतारों, पैग़म्बरों तथा ऋषियों का विरसा या दाय नहीं होता । उन्हें परमात्मा की ओर से जो शुद्ध ज्ञान मिलता है, वह उन की निजी पूंजी नहीं होती । वह ज्ञान की शुद्ध बातें ईश्वर अपनी अपार कृपा से संसार के लोगों के हित के लिये युग के अवतार व ऋषि और पैग़म्बर के द्वारा लोगों को देता है। वह लोगों की धरोहर होती हैं ।

अथर्ववेद कांड नं. 20, सूक्त नं. 115 मंत्र नं. 1 का ऋषि 'वत्स कण्व' है । यह कण्व वंश में पैदा हुए थे यह वैदिक ऋषि हैं । इनकी ऋषित्व चारों वेदों में नज़र आती है । (अथर्व वेद भाग 2, अनुवादक श्री राम शर्मा आचार्य, भगवति देवी, बरेली यू.पी.)

ऋषि 'वत्स' कण्व का 20.115:1 के अर्थों और मफ़हूम में अपने पिता से सार गर्भित, सत्यज्ञान का मीमांसा शक्ति और विवेक आत्मिक बुद्धि से पूरे तौर पर पाना शामिल है । जिसके आधार पर उस का सूर्य के सरीखा व

समान (मज़्हर, मसील) होना अनिवार्य ठहरता है ।

1. ऋषि वत्स एक दृष्टि में

वत्स ऋषि पर अथवा उनके पिता इन्द्र पर, किसी पर भी वेद या उपनिषद तथा शरीअत का प्रकाश नहीं हुआ और न ही हिन्दुओं में कोई सहीफ़ा, पुराण, स्मृति, वेद एवं कोई शास्त्र, शरीअत के रूप में वत्स ऋषि की ओर मनोनीत हैं ।

अथर्ववेद के इस मन्त्र नं. 1 का देवता इन्द्र है । वेदों में हज़ारों मन्त्रों का देवता इन्द्र है । इन्द्र पर किसी शरीअत का प्रकाश नहीं हुआ ।

अतः इन्द्र की दाय या विरासित का प्रश्न ही पैदा नहीं होता । इस लिये दाय के विचार से भी इन्द्र का पुत्र वत्स किसी शरीअत के स्वामी थे । न ही उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता अथवा सान्सारिक पिता से किसी प्रकार की कोई शरीअत नहीं पाई । अतः वत्स इस सूक्त व मन्त्र का मिस्दाक़ नहीं हो सकता । इस मन्त्र का मिस्दाक़ केवल अहमद ही है । जिसने अपने आध्यात्मिक पिता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूर्ण जीवन पद्धति, पवित्र, सार गर्भित सत्य ज्ञान, विश्व व्यापि, सदा सर्वदा क़ायम रहने वाला क़ुर्आन प्राप्त किया । जो हज़रत रसूल करीम पर वह्य-मत्लव्व, शाब्दिक ईशवाणी द्वारा ईश्वर की ओर से उतरा था । जिसके लाभदायक होने का विवरण इस मन्त्र में पाया जाता है ।

2. अंग्रस ऋषि

अथर्ववेद की शैनक शाखा के अतिरिक्त दूसरे भाग पिप्लाद शाखा के अंग्रस भाग को अंगस ऋषि की ओर मनोनीत किया जाता है । 'अंग्रस ऋषि, अथर्वा ऋषि से चौथी पुश्त के पीछे पैदा हुआ था ।

(भूमिका अथर्ववेद, प्र. ग्रिफ़थ साहब, भाष-अथर्ववेद, प्र. बाहणी साहब)

ऋग्वेद और अथर्ववेद के युगों के बीच चार हज़ार साल का अन्तर है । अंग्रस ऋषि, ऋग्वेद के ज़माने का ऋषि नहीं है । इस ऋषि से कोई शरीअत अथवा कोई पुराण मनोनीत नहीं है । अतः वत्स और अंग्रस इन्द्र के दोनों पुत्र

दाय के उपलक्ष किसी शरीअत के स्वामी नहीं थे, तथा न हीं वे अहमद वाले मन्त्र के मिसदाक़ हो सकते हैं।

सारांश यह कि अथर्ववेद कांड नं. 20, सूक्त नं. 115 मन्त्र नं. 1 का मिस्दाक़ केवल अहमद ऋषि ही है । जिसने अपने आध्यात्मिक पिता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विश्वव्यापि, सार गर्भित, महाप्रलय तक क़ायम रहने वाली शरीअत, सार गर्भित ज्ञान, पूरी मीमाँसा शक्ति से, विवेक आत्मिक बुद्धि से, गंभीर चिंतन से पूरे का पूरा प्राप्त किया और उस तथ्य पूर्ण शरीअत् के आधार पर वह अपने आध्यात्मिक पिता शम्स मुनीर 'सूर्य इवा जनि' के रंग में पूर्णतया रंगीन हो गया । वही 'अहमद' कल्कि अवतार है।

2. अथर्ववेद व कल्कि पुराण में अहमद

हिन्दुओं के पवित्र, धार्मिक ग्रन्थ अथर्ववेद में अहमद ऋषि को आदेश दिया गया है कि वह संसार के लोगों के पास चलकर जाये और ऐसे सदा बहार शजरा तैय्यबा, वृक्ष के बारे में बतायें, जो हर समय अपना ताज़ा फल देता रहता है । लिखा है :-

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः ।
नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षरो न भूरिजो रिवः ॥

(अथर्ववेद कांड नं. 20, सूक्त नं. 127 मन्त्र नं. 4) तथा मन्त्र नं. 5 व 6 में प्रेभ स्तुत आया है ।

शाब्दिक अनुवाद पद्म चन्द्र कोष के आधार पर

'हे बेहद्द (ईश) - स्तुति करने वाले । (अहमद) तू लोगों के पास चल कर जा और अपने दोनों होंठों से (नर्म) ज़बान से (क़ौले लय्यन से) ऐसे (सदा बहार) वृक्ष के बारे में बातें बता, जो वृक्ष कि काटे जाने पर भी बार-बार पैदा हो जाने वाला है । वह बुरे तथा भले में स्पष्टीकरण अन्तर का साधन है। उसकी मोती-हीरे जैसी प्रशंसा की गई है।

"हे स्तुतः (अहमद) तू चुस्ती से, और शान्ति से चुपके से, गद्दर फल

चाक़ू जैसी चलने वाली, ख़ुशी के गीत गाने वाली जिह्वा से फलों को काट कर प्राप्त कर, तू छोटे बड़े सभी के पास चल कर जा । यह तेरे लिये नेक शगन है ।

अथर्ववेद के इन मन्त्रों में रेभ, प्रेभ को स्तुतः 'स्तुति करने वाला, बताया गया है । अरबी भाषा में स्तुतः या स्तुति करने वाले को अहमद कहा जाता है । अहमद ईश स्तुतः का बड़ा काम शज्रा ए तय्यबा' क़ुर्आन का प्रचार बताया गया है । इस का विवरण आगे बयान किया जायेगा ।

कल्कि पुराण और अहमद

हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि कलियुग में श्री कृष्णजी महाराज के अवतारी स्वरूप का नाम अहमद होगा। श्री नानक देव जी महराज के एक कथनानुसार 'पर जामा, पहरावा उस का मुसलमानी होगा । मानो कल्कि अवतार अहमद मुसलमान जाति में से प्रकट होगा ।

कल्कि पुराण

अठारह पुराणों में से कल्कि पुराण का बहुत बड़ा महत्व हैं । इस लिये कि चारों युगों में से चौथा कलियुग है । जिसमें पाई जाने वाली भीषण बुराइयों, भयंकर घिन्नौने पापों का विस्तार से वर्णन मिलता है ।

वास्तव में कल्कि पुराण कल्कि अवतार कृष्ण से तथा उसके स्वरूप अहमद से ही सम्बंधित है । यह ग्रन्थ कृष्ण के स्वरूप अहमद के द्वारा सभी क़ौमों, विशेषकर हिन्दू क़ौम को सारी जातियों पर प्रतिष्ठा प्रदान करने, भारत भूमि में पैदा हुआ है । भविष्य में कल्कि अवतार अहमद के द्वारा भारत को देशों का शिरोमणी तथा हिन्दु जाति के लोग सारी जातियों के सरदार बनाये जायेंगे ।

कल्कि पुराण में लिखा हुआ है कि

क्रुमर्कनारिलर च नाना वृक्ष चाशो मतिम
वन ददर्शरुचिरं शुक सूकूरण कल्कि पुरान्ते वने ।

कल्कि पोराण, अध्याय नं. 11 श्लोक नं. 47 से 50 तक पृ. नं. 48

अनुवादक पं. ईश्वरी प्रसाद शर्मा,मैनेजर अख़बार भारत वासी, मेरठ, यू.पी. भारत।

'कल्कि भगवान जी उनमें और बाग़ीचों को देखकर, जो शहर के क़रीब थे, दिल में बहुत खुश हुए । 'अहमद' ने इज़्ज़त और मोहब्बत से कहा, हे तोते ! हम इस जगह स्नान करेंगे । कल्कि पुराण, बाब नं. 2, पृ. नं. 48 अध्याय नं. 1 श्लोक नं. 47 से 50 तक । अल्मश्तहर, पं. ईश्वरी प्रसाद, मैनेजर अख़्बार, भारत वासी । मत्बा सादिक़-उल्-मताबे, सद्र मेरठ, 1897 ई. ।

अनुवादक श्री राम शर्मा आचार्य भगवती देवी, बरेली, यू.पी. ।

''वन, कुदाल, शाला, नारंगी, अर्जुन, शिश्पा, कर्मुक, आम कैथ, अशेथ, खजूर, बीज पौद क्रुंज, पुन्नागु, पंस, नारियल, आदि विविध प्रकार के वृक्षों से सुशोभित और फलों, पुष्पों कपतर आदि से परिपूर्ण स्थानों को कल्कि जी ने देखा ।

कल्कि पुराण, भाग नं. 2 अध्याय नं. 1 श्लोक नं. 47 से 50 तक ।

(आ) कल्कि पुराण के इस स्थान पर कलियुग के अवतार का नाम अहमद बताया गया है ।

(ब) परन्तु पं. श्री राम आचार्य बरेली ने 'अहमद' मुसलमानी नाम से भयभीत होकर अहमद व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्ता के स्थान पर कल्कि भगवान या ''कल्कि जी'' अर्थ किया है । कल्कि जी अहमद शब्द का असली व हक़ीक़ी अर्थ नहीं, अपितु मजाज़ी अर्थ है । ऐसा लगता है कि यह अर्थ हिन्दू जाति को अहमद, कल्कि अवतार से दूर रखने के लिये किया गया है ।

अस्तु, कल्कि पुराण में कलियुग में प्रकट होने वाले अवतार का नाम अहमद बताया गया है जो कृष्ण जी महाराज का स्वरूप तथा मसील व मज़्हर होगा । इसके अतिरिक्त ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी 'अहमद' नाम मौजूद है । कुल मिलाकर वेदों में इकत्तीस बार अहमद नाम आया है । (अब भी अगर न जागे तो... पृ. नं. 100, लेखक शम्स नवीद उस्मानी, रामपुर, यू.पी.)

यह बात भी बताई गई है कि अहमद ऋषि अपने से पहले वाले एक

महान प्रतिष्ठित महर्षि का आध्यात्मिक सुपुत्र, उस का स्वरूप, उस जैसा होगा और वह उत्तम, आला, सदा सर्वदा क़ायम रहनेवाली, विश्व व्यापि, कामिल शरीअत् का अपने पिता के तुफ़ैल व वसीला से पूरे तौर पर वारिस होगा तथा उसी शरीअत् का प्रचार करेगा।

एक कठिनाई, उलझन

अथर्ववेद 20-115:1, ऋग्वेद, सामवेद में आया है 'अहम सूर्य इवाजनि' कि मैं सूरज जैसा पैदा हुआ हूँ। अनुवाद करने वाले, व्याख्या करने वाले, भाष्यकार मन्त्र के इस भाग को ज़ाहिर पर क़यास करके अपने अनुवाद को सम्भव रूप में ढालने के प्रयत्न किये हैं, क्योंकि लाखों, करोड़ों मील लंबा, चौड़ा यह अग्नि गोलाकार सूर्य सारे संसार, आकाश पाताल और जो कुछ इन दोनों के बीच है। सब का अध्यक्ष तथा सब का जीवन दाता है। उस का एक छोटे से सीमित, शरीर धारी मनुष्य का स्वरूप होना असम्भव बात है।

इस कठिनाई का हल पवित्र क़ुर्आन ने बताया है। वास्तव में इस स्थान में सूर्य तथा उसके मज़्हरे अतम स्वरूप अहमद में समर्थन करने वाली भविष्यवाणी निहित है। यह भविष्य वाणी ब्रह्म की गूढ हिकमत और रहस्य के अधीन परदा में छिपी रही। जब तक शम्शे मुनीर, सूर्य के स्वरूप अहमद का प्रादुर्भाव नहीं हो गया।

सूर्य, शम्से मुनीर मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व)

क़ुर्आन मजीद में नराशंस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सिराज मुनीर कहा गया है। जैसा कि मन्त्र में सूर्य इवा जनि के शब्द आये हैं। अहज़ाब आयत नं. 46 व 47 में कहा गया है :-

'हे नबी ! हमने तुझे शाहिद, साक्षी और मुबश्शिर, शुभ सूचक, एवं सावधान करने वाला अवतार बनाकर भेजा है और तू अल्लाह के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला तथा एक चमकता हुआ रोशन सूर्य है।

इसमें रहस्सय यह है कि जिस प्रकार, संसार, अन्तरिक्ष, आकाश के

तारा गण सौर मंडल, तथा प्राणी मात्र, व मानव जगत् और खनिज पदार्थ आदि सभी सूर्य से ही लाभान्वित होते हैं । नैचुरल प्रबन्ध स्वभाविक ही कुछ इसी ढ़ंग से चल रहा है । आध्यात्मिक जगत में स्वयं अहमद तथा वे सारे लोग जो ब्रह्म में तल्लीन होने के इच्छुक हैं । वे आध्यात्मिक सूर्य, सातों भू-मंडल के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़ैज़ से लाभान्वित होते हैं।

अत: मन्त्र विचाराधीन में शब्द ''अहमद'' का अभिप्राय यह है कि अहमद ऋषि ने अपने आध्यात्मिक पिता, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से, जो आध्यात्मिक संसार के सूर्य हैं, विश्वव्यापि पवित्र शरीअत क़ुर्आन करीम को हर प्रकार से पूरे का पूरा common cence से प्राप्त किया और उस के कारण अपने आध्यात्मिक पिता सिराजे मुनीर मुहम्मद मुस्तफ़ा का आध्यात्मिक रूप में सर्वांगीण मज़हर व स्वरूप ठहरा।

अहमद का आध्यात्मिक पिता

1. क़ुर्आन मजीद में 'अहमद' के आध्यात्मिक पिता का एक नाम 'सिराजे मुनीर' आया है । सूर: अहज़ाब, आयत नं. 46-47 । अथर्ववेद में 'अहँ' सूर्य इवा जनि' उसे सूर्य कहा गया है ।

(ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, 20-115:1)

2. अथर्ववेद कांड 20-1:25-26 में कहा गया है कि हे सूर्य ! सिराजे मुनीर । (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तू लोगों की भलाई के लिए सौ चप्पु वाली नौका (114 सूरतों वाले क़ुर्आन) का खेवट है, जो लोगों को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है ।' किताबुन् अन्-ज़लनाहु इलैक ले तुख़रेजन्नासा मिनज़ुलुमाते इलन्नूर, (सूर: इब्राहीम नं. 2)

अथर्ववेद 20-127:11 में आप का नाम कारू मुहम्मद (पद्मचन्द्र कोष) और 20-127-7 में ममह अर्थात् नूर, पूज्य, व 20-127-7 में वैश्वानर अर्थात् जगत गुरू I belonging to all men, conssating all men, अथर्ववेद 20-127:3:1 में नराशंस मुहम्मद अर्थात् अतिशयोक्ति से बढ़कर प्रशंसा व स्तुति के योग्य । 'अथर्ववेद' में

कौरम, कारवे, प्रशंसनीय, स्तुति के योग्य आप के गुणवाचक नाम आये हैं।

पुराण :- महामद, दीन, धर्म स्थापित करने वाला, परमात्मा के प्रेम में मतवाला । महामद मुहम्मद पुराण आदि की भविष्यवाणी में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम आये हैं ।

सारांश यह है कि हज़रत अहमद के पिता मुहम्मद The most successfull of all prophets and religious (इन्साईक्लो पीडिया ब्रिटानिका शब्द क़ुर्आन) अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ही संसार भर के अवतारों और महर्षियों के शिरोमणि और सबसे बढ़कर सफल मानव अवतार कहा गया है ।

कल्कि अवतार अहमद का आध्यात्मिक पिता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व)

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में कल्कि अवतार ''अहमद'' को विश्व व्यापि, सर्वांगीण पूर्ण, महा प्रलय तक क़ायम रहने वाली शरीअत लाने वाले अवतार-शिरोमणि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आध्यात्मिक सुपुत्र ठहराया गया है । अब इस्लामी लिट्रेचर में कल्कि अवतार के नाम 'अहमद' के बारे में बताया जा रहा है ।

इस्लामी लिट्रेचर में चौदहवीं शताब्दी, कल्कि अवतार 'अहमद'

1. क़ुर्आन मजीद में आता है 'इस्मुहु अहमद' सारे मुसलमान विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मियों में प्रादर्भूत होने के समय कलियुग या चौदहवीं सदी में पूरी होगी जबकि आप का आध्यात्मिक पुत्र ''अहमद'' नाम से प्रकट होगा । सूर: सफ़ आयत नं. 7)

हज़रत इमाम महदी, कल्कि अवतार के बारे में दो सौ हदीसें हैं जिनमें हज़रत अहमद नाम पर विवरणात्मक प्रकाश डाला गया है । सारे लिट्रेचर में कलियुग के अहमद अवतार को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा का आध्यात्मिक पुत्र

बताया गया है तथा उसके आध्यात्मिक सुपुत्र होने की सुन्दर व्याख्या की गई है।

हज़रत मुहम्मद(स.अ.व) का आध्यात्मिक पुत्र 'अहमद'

"अबूबीय्यत और इब्नीय्यत" पिता तथा पुत्र होने की दार्शनिकता (फ़लसफ़ियाना) ढंग से व्याख्या करते हुए मिर्ज़ा अबुल हसन अस्तफ़हानी 'सलसबील' में इस्ना अशरिया नाम की प्रसिद्ध पुस्तक के आधार पर लिखते हैं :-

"आले मुहम्मद अह्लहू व इमारताहू अम्मा यकूनो सूरतुन् फ़क़त औ माउनन् फ़क़त... वफ़ीहा तरग़बु औलिया व ज़ालिका अकमलु व अजमलु व अफ़ज़लु । (सलसबील पृ. नं. 377, मुद्रित 1312 हि. बम्बई, भारत) ।

अनुवाद :- आले मुहम्मद जो आपके निकट सम्बंधी हैं, या तो सूरी लिहाज़ से होंगे या माअनवी लिहाज़ या सूरी और माअनवी दोनों लिहाज़ से होंगे । अतः जिस शख़्स (व्यक्ति) की निस्बत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सूरत और मानवी दोनों लिहाज़ से हो, अन्ततः वही इमाम है । जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क़ायम मुक़ाम और खलीफ़ा है । यह इसलिये हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिये एक एक सूरत 'जिस्मे उन्सरी' है और एक सूरत दीनी और एक सूरत नूरी या रूहानी व माअनवी है । अतः जिस न आपकी सूरत दीनी को क़ायम किया और उस की निस्बत आपकी सूरते नूरिय्या व रूहिया की तरफ़ सहीह हुआ और उस में आप की सूरते माअनीय्या मुस्तहक़क़क़् हो, तो वह आपके इल्म, मुक़ाम और हाल का वारिस होगा । तथा वह हक़ीक़त में आप के सुल्बी (अपाके वीर्य से पैदा होने वाले) बेटे की मानिंद होगा, तथा इस निस्बत और कराबत के लिहाज़ से मुक़ामात एवं दरजात मुत्फ़ावत हैं और इसी निस्बत की औलिया कराम रग़बत रखते हैं और यह निस्बत सबसे बेहतर और कामिल और सब से अफ़ज़ल है।" (अनुवाद, पुस्तक इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर, पृ. नं. 20, 21, 14, मुद्रित व प्रकाशक, अध्यक्ष, नशर-व-इशाअत इस्लाह व इरशाद, रब्वाह, पाकिस्तान)

हज़रत अहमद के पुत्र होने का स्पष्टीकरण

कल्कि अवतार हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम अपने आध्यात्मिक पिता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ईश ज्योति ग्रहण करने के संबन्ध में लिखते हैं :

''व लाकिर्रसूल व खातमन्नब्बीय्यीन''

इस स्थान पर यह संकेत भी दे दिया कि आँजनाब अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उन सुल्हा (सुधारकों) के हक़ में बाप के हुक्म में हैं, जिनकी मुताबेअत पैरवी द्वारा नफ़ूस की तकमील की जाती और वह्य द्वारा (ईशवाणी) और मुकाश्फ़ात (अंतर ज्ञान) का शर्फ़ उनको दिया जाता है ....अब नबुव्वत का कमाल अर्थात् अवतार पदवी केवल उसी को मिलेगी, जो अपने आमाल (कर्मों) पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहर रखता होगा और इस प्रकार वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बेटा और वारिस होगा... अर्थात् ऐसे कमालात का मालिक तथा एक जिहित (तरफ़) से तो उम्मती (मुसलमानों में से) हो, तथा दूसरी जिहित से इक्तसाबे अनवारे मुहम्मदिय्या, अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नूर संज्योतिर्मय होने के आधार पर नबुव्वत के कमालात (विशेषताएँ) भी अपने अन्दर रखता है।

(रिवियू बर मुबाहिसा, चकड़ालवी) रूहानी ख़ज़ायन, पृ. नं. 774)

इस संक्षिप्त से लेख का विवरण हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों को उपलक्ष में रख कर पहले हो चुका है । ऋग्वेद, सामवेद आदि धार्मिक ग्रन्थों और अथर्ववेद 20:115:1 में अहमद का अपने पिता से शरीअत् पाने के उल्लेख में बताया जा चुका है कि क़ुर्आन मजीद विश्वव्यापि, कामिल शरीअत, पवित्र क़ुर्आन परिपूर्ण, विश्वव्यापि, दायमी शरीअत है । क़ुर्आन मजीद ही एक ऐसा धार्मिक ग्रन्थ है, जो तबदील होने, प्रक्षेपणों तथा मिलावटों से बचा हुआ है । (सूरः मायदा आयत नं. 4, ज़ुख़्रुफ़ आयत नं. 62, नूर आयत नं. 36)

दूसरे धार्मिक ग्रन्थों में युग युगान्तरों के बीतने के कारण प्रक्षेपकों के शिकार हो चुके हैं।

क़ुर्आन मजीद का पहली जातियों और धर्मों पर यह बड़ा एहसान है कि उसमें पहली उम्मतों और जातियों की प्रलय तक क़ायम रहने वाली सच्चाइयों, तथ्यों को अपने अन्दर समो लिया है । (सूरः अल्बय्यना आयत नं. 4) जो बीते समय में अवतारों, ऋषियों और सुधारकों के द्वारा प्रकाशित की गई थी ।

सर विलियम म्योर

यूरोप निवासी सर विलियम म्योर अपनी पुस्तक में क़ुर्आन के प्रति लिखते हैं कि,

''दुनिया के परदे पर ग़ालिबन् क़ुर्आन के सिवा कोई ऐसी किताब नहीं, जो बारह सौ साल के लम्बे समय तक बग़ैर किसी तहरीफ़ व तब्दीली के अपनी असली सूरत में महफ़ूज़ हो ।''

(दीबाचा लाईफ़ आफ़ मुहम्मद. पृ. नं. 21-22, 25-26)

कलियुग के निशान

कलियुग, आख़िरी ज़माना (चौदहवीं सदी) जिसे भयानक, महा पापों, कुकर्मों और अश्लीलता का युग कहा जाता है । वह हज़रत कृष्ण जी महाराज के कलियुग में प्रकट होने से सम्बंधित है । आपके मुस्लेह आख़िरुज़मान, इमाम महदी अहमद अलैहिस्सलाम के रूप में प्रादुर्भूत होने से जुड़ा हुआ है ।

जब से संसार की सृष्टि हुई है, हरेक अवतार ने कलियुग को पापों की दृष्टि से सारे युगों से सबसे बढ़ कर भयंकर, ठहराया है । इसी युग में दज्जाल का निकलना और सारे संसार पर छा जाना बयान किया गया है ।

हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों और लिट्रेचर में कलियुग में होने वाली बेहयाई के बुरे और घिनौने महा पापों का सविस्तार वृतान्त पाया जाता है जैसे, श्रीमद् भगवत गीता, भगवत (पुराण) स्कन्द नं. 12, पृ. नं. 622-623) रामायण, महाभारत, वन पर्व, कल्कि पुराण । अनेक विद्वानों के लेख, भाषण लिट्रेचर तथा कवियों की पुकार जिन का सार इस प्रकार है ।

''कलियुग में पैदावार और पेड़ों में फलों की कमी हो जायेगी । अकाल

और भुखमरी, भूकम्प तथा मौता मौती बहुत होगी । ठीक समय पर वर्षा नहीं हुआ करेगी । ग़ल्ला व दाना, अनाज महगा होगा । स्त्रियाँ अपने पतियों के होते हुए अपने नौकरों और दूसरे मर्दों से प्यार एवं भोग किया करेंगी । जवान लड़कियाँ पर्दा नहीं किया करेंगी । व्याचार, अश्लीलता, बलात्कार बढ़ जायेंगे । उपासना गृह सुनसान; परन्तु शराब ख़ाने और चकले आबाद होंगे । सन्तान माता पिता, गुरूओं और बुज़ुरगों की सेवा से मुक्त, किन्तु ससुराल वालों की सेवा में जुटी रहेगी । लोग नाखून और बाल बढ़ाकर महात्मा बन जाया करेंगे, ढोंगी साधू सन्तों की भीड़ होगी । दज्जाल का ख़ुरूज होगा उस का कोई मुक़ाबला न कर सकेगा । नए नए वाहन निकल आयेंगे । एक देश दूसरे देश पर तथा एक क़ौम दूसरी क़ौम पर चढ़ाई करेगी । कल्कि अवतार के न मानने के कारण एक मुसीबत व विपदा समाप्त नहीं होगी, तो दूसरी अपना मुँह खोले आ खड़ी होगी । ये सब मुसीबतें आसमान और ज़मीन से आयेंगी । उनसे गाँव शहर पहाड़ पक्षी, पशु हिंसक पशु कोई भी सुरक्षित नहीं होगा ।

ऐसे वातावरण में परमेश्वर अपनी अपार कृपा से अपने लोगों की पुकार और दुआओं को सुनेगा तथा कल्कि अवतार को प्रकट करेगा ।

इन्तेज़ार और दुआयें

जब चौदहवीं शताब्दी सिर पर आ गई और आख़िरी ज़माना, कलियुग बेहद्द मकरूह व भयानक, घिनौने पापों का रूप धार कर आ गया तो हिन्दुओं, इसाइयों, सिक्खों तथा मुसलमानों व अन्य जातियों आदि सारे धार्मिक संसार में एक हल-चल मच गई और कल्कि अवतार श्री कृष्ण मुरारी के स्वरूप के शीघ्र प्रादुर्भाव के लिये इल्तजायें, प्रार्थनाएँ, दुआयें, दान, ख़ैरात ज़ोर पकड़ गये । धार्मिक नेताओं, पंडितों कवियों, विद्वानों, मुसलमानों हिन्दुओं, इसाइयों के उपदेशकों ने मुस्लेह आख़िर ज़मान के प्रादुर्भाव के लिये स्वयं रो-रो कर व्याख्यान दिये, और लोगों को भी रुलाया ।

1. हिन्दू धर्म के लीडर और नेता नब्बे वर्ष से यह ज़ोर दे रहे हैं कि -

''कलियुग का प्रभाव बहुत बढ़ चुका है । पाप अपने यौवन पर है ।

धर्म की नौका मंझधार में फंस चुकी है । धर्म की आड़ में हज़ारों प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं । इसलिये आज भारत को द्वापर युग जैसे भगवान कृष्ण की आवश्यकता है जो अपने सुदर्शन चक्र की झलक दिखा कर अत्याचार, ज़ुल्म तथा पापों को नष्ट करके फिर भारत में शान्ति, सकून पैदा करें ।''
(सुदर्शन चक्र, रावलपिंडी, 5 कार्तिक 1942 विक्रमी पृ. 6)

हर वर्ष जन्माष्टमी आती है और भारत भर के हिन्दू श्री कृष्ण जी महाराज को शीघ्र प्रकट होने के लिये पुकारते हैं और दुआयें करते हैं ।

2. श्री रतन देश दत्त पाँडे शरेश पुकारते हैं कि -

भारत पुकारता है घनश्याम आज आवो ।
बिगड़ी दशा बनाने, घनश्याम आज आवो ।।

(ब्रह्मन सर्वस्व, इटावा, पृ. नं. 4, जिल्द नं. 29)

3. ब्या ऐ इमामे सदाक़त शुआर ।
कि ब्गुज़रात अज़ हद्दे ग़म इन्तेज़ार ।।

मौलाना सय्यद मुहम्मद सब्तीन, 1236 हि.)

''हे सच्चे इमाम महदी, अब तो शीघ्र आवो, कि अब तो आप का इन्तेज़ार ग़म, दुःख की सीमा को पार कर चुका है ।''

4. आज से 80 वर्ष पूर्व ज़मीनदार समाचर पत्र में एक कविता ''एक मुस्लेह की आमद'' शीर्षक से छपी थी, उस के दो शैर देखें -

आने वाले आ ज़माने की इमामत के लिए ।
मुज़्तरिब हैं तेरे शैदाई ज़्यारत के लिए ।।
उठ दिखा गुम्गशतः राहों को सिराते मुस्तक़ीम ।
इक ज़माने को है मीरे कारवाँ का इन्तेज़ार ।।

(ज़मीनदार लाहौर 19 मार्च 1925 ई.)

5. निःकलंक अवतार आ आ ऐ इमामे दो जहां ।
मुन्तज़िर हैं हम कि अब होता है तेरा कब ज़हूर ।।
तू मुसलमानों का महदी, तू नसारा का मसीह ।
तू शहे सुक्कान पस्ती, तू शहन्शाहे तयूर ।।

(वीर भारत लाहौर, कृष्ण नम्बर, अगस्त 1937 ई. पृ. नं. 16)

6. इन्तेज़ारे दीद में फिर, दीदाए मुश्ताक़ है ।
आ कि तेरे हिज़र में अब, ज़िंदगानी शाक़ है ॥
आ बुलाती है तुझे बरबादीये हिन्दोस्तान् ।
आ कि होगी तुझ से ही आज़ादी ये हिन्दोस्तान् ॥

(प्रताप, कृष्ण नम्बर, 28 अगस्त, 1929 ई. पृ. 29)

''अब कृष्ण भगवान की महाभारत के ज़माने से ज़्यादा ज़रूरत बढ़ गई है।'' (अख़्बार, तेज़, दिल्ली 18 अगस्त 1930 ई.)

''पुण्य देश भारत की भूमि, पापों की सरताज बनीं ।
मात्र भूमि की विपदा करे, फिर शीघ्र मिटाने आवो ॥
हाथ जोड़ कर शाख़ तुम्हारी, यही प्रार्थना करता ।
गीता में जो वचन दिया है, पूरा कर दिखलावो ॥''

(चेतावनी 1942 ई. उर्दू, पृ. नं. 2, लेखक, पं, राज नारायन, शास्त्री अर्मान, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, गुड़गाँवाँ ।)

सो कलियुग और चौदहवीं शताब्दी ही एक ऐसा समय था, जिसे हिन्दू ग्रन्थों में घोर कलियुग का नाम दिया गया था । जो बदियों, बलात्कारियों, पापों, अराजकता और अशान्ति आदि हर प्रकार के दुःखों के उपलक्ष किसी सुधारक और अवतार के प्रादुर्भाव का तक़ाज़ा व माँग करता था, कि वह अवतार आकर घोर कलयुग को सत्ययुग में बदल दे ।

कल्कि अवतार का जन्म

हिन्दू विद्वानों और ज्योतिषियों ने हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर खुल्लम खुल्ला, ज़ोर देकर लिखा है कि कल्कि अवतार कृष्ण जी महाराज के अवतारी स्वरूप (मसील) का जन्म हो चुका है । अतः कल्कि पुराण में, जो कलियुग और कृष्ण जी महाराज से ही सम्बन्धित है (स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि -

1. ''लक्ष्मी पति परम दयालु भगवान ने ब्रह्मा जी की कृपा से धर्म को जारी करने के लिये संभल (शंभल) नगरी में विष्शुयश ब्राह्मण के हाँ अवतार लिया है ।'' (कल्कि पुराण, खंड नं. 2, अध्याय नं. 1, श्लोक नं. 22, पृ. नं. 45, प्रेस सादक़ उल्-मुताबे, मुद्रित मेरठ, 1897 ई. (उर्दू) अल्मुशहर

पं, हर दयाल, शर्मा, पं. ईश्वरी परसाद राम चन्द्र मेरठ) ।

2. पंडित राज नरायन अर्मान, शास्त्री, प्रसिद्ध ज्योतिषी ने लिखा है कि :-

मौसम वसंत में सूर्योदय से पहले ऐसे मुबारक समय में...

पूर्ण ब्रह्म वसुदेव भगवान कृष्ण ने ही कल्कि रूप में जन्म लिया है । आपका शुभ-जन्म ब्राह्मण वंश में महात्मा पं, विष्णुयश जी के घर सोमती जी के गर्भ से संभल गाँव में हुआ है । चेतावनी, (उर्दू) 1942 ई. । पृ. नं 59-60-61, संपाप्दिक, पं. राज नायायण, शास्त्र, प्रसिद्ध ज्योतिषी, गुड़गाँवाँ, पंजाब, भारत ।

विचारणीय बात

हिन्दू विद्वानों ने लिखा है कि श्री कृष्ण जी महाराज के पिता का असली नाम वसु देव और माता जी का असली नाम देवकी जी था, परन्तु कलियुग में उन के अवतारी स्वरूप पिता का नाम विष्णुयश तथा माता जी का नाम सोमती (चाँद जैसी सुन्दर) बताया है । इससे सिद्ध होता है कि हज़ारों वर्ष पहले कृष्ण जी और माता देवकी जी आवागमन, हलूल द्वारा (गर्भ धार) कर सोमती जो कि गर्भ में नहीं आये, और न ही माता देवकी जी, तथा न ही कभी आवागमन द्वारा आयेंगे, अपितु कलियुग में कृष्ण जी के माता-पिता दूसरे नाम के होंगे तथा कलियुग में उनका स्वरूप (मज़हर) उन के गुणों से विभूषित व समन्वित होकर आयेगा, जिस का नाम अहमद होगा, जैसा कि कल्कि पुराण अध्याय नं. 1 श्लोक नं. 22, पृ. 45 में पहले बयान हो चुका है । इस के उपलक्ष में यह बताना है कि कलियुग में प्रकट होने वाले श्री कृष्ण जी के स्वरूप, मसील व मज़्हर का नाम कृष्ण न होकर उनका कलियुग वाला अलग दूसरा नाम होगा । वह स्वभावत: श्री कृष्ण जी के सुगुणों का प्रतीक होगा, सो यह नाम और संभल नगरी अर्थ पूर्ण और विभावना पूर्ण शब्द है । इन के और और अर्थ भी निकल सकते हैं । इन का स्पष्टी करण अनिवार्य जो आगे किया जा रहा है ।

कल्कि अवतार का जन्म 'श्री जन्म कुण्डली' के अनुसार

कल्कि पुराण 1-22 में और चेतावनी (उर्दू) 1942 ई. में कल्कि अवतार के शुभ जन्म की ख़ुशख़बरी दी गई है । श्री पं. राज नारायण शास्त्री ने ज्योतिष की दृष्टि से सिद्ध किया है कि कलियुग के अवतार का जन्म हो चुका है । जन्म कुण्डली का नमूना यह दिया है ।

श्री जन्म कुण्डली देने के बाद पं. राज नारायण ज्योतिषी लिखते हैं कि :-

"जन्म लगन में ख़ास योग पड़ा हुआ है । मशहूर ज्योतिष ग्रन्थ रणबीर महानिबन्ध में आता है :-"

"त्रिकोणों सितवा देवअ्च सौच्चे केन्द्र गते कृजा: 1 चरनं लग्ने यवा जन्म, योगो यमानतार जं: ।"

"अर्थात् त्रिक़ोण पाँचवें घर में शुक्र अथवा वृहस्पति, (ज़ुहरा या मुश्त्रि) हो, केन्द्र में ऊँच का सनीचर हो और चर लगन का जन्म हो तो ऐसे समय में अवतार हुआ करता **है** ।...

"...यह योग पूरी तरह कुण्डली में पड़ी हुई है । केन्द्र अर्थात् **चौथे** घर में ऊँच का सनीचर है और इस योग में अधिक बात यह है कि कुण्डली में सूर्य, मंगल और चन्द्रमा भी ऊंच के है ।" (चेतावनी, 1942 ई. (उर्दू) पृ. नं. 62-63) ।

अतः कल्कि पुराण और चेतावनी के अनुसार श्री कृष्ण जी महाराज के स्वरूप का जन्म हो चुका है । जब 1943 ई. में सूर्य और चन्द्रमा को पूर्ण ग्रहण हुआ, तो सारे भारत में सत्युग के आरम्भ होने के मसला को ले कर बहुत शोर पड़ा था, हज़रत कृष्ण जी के प्रादुर्भाव होने तथा उनको ढूँढ़ने की चर्चा चलती रही ।

सूर्य-चन्द्र ग्रहण

(श्रीमद भागवत पुराण)

हिन्दुओं के अठारह पुराणों में भागवत (पुराण) हज़रत कृष्ण जी के हालात की बड़ी पुस्तक है । इस पुराण में सैद्धान्तिक रूप में एक ऐसे **ग्रहण** का उल्लेख पाया जाता है, जो एक अवतार की सच्चाई का ज़बरदस्त साक्षी माना गया है ।

भागवत में लिखा है कि ज्योतिष के अनुसार :-

''यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च ति[illegible] बृहस्पती ।
एक राशौ समेष्यन्ति तदा भवति तत्[illegible] ॥''

(श्रीमद् भागवत पुराण, स्कन्द नं. 12, अध्याय नं. 2, श्लोक [illegible]4) ।

''अर्थात् जब पुख नक्षत्र चन्द्रमा, सूर्य और मुश्त्रि एक राशी [illegible] समानवस्था में एकत्रित होते हैं, तो सत्युग का आरम्भ होता है ।''

ऐसी अवस्था में सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण का लगना अनिवार्य होता है। यह योग कहलाता है । यह योग परमेश्वर, प्रकट होने वाले अवतार या सुधारक की सत्यता के लिये दिखाता है ।

ऐसा योग हज़रत मुस्लेह ज़मान कल्कि अवतार अहमद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के लिए साक्षी के रूप में 1894 ई. में पड़ा था, जबकि 13 रमज़ान 1311 हि. 22 मार्च 1894 ई. वृहस्पति व शुक्र की मध्यरात्रि को पूर्ण चन्द्र ग्रहण हुआ और उस दिन जुमाँतुल्विदा (रमज़ान मास का अन्तिम शुक्रवार) तथा होली के त्यौहार थे । 13 रमज़ान नेचर के अनुसार चन्द्र ग्रहण की प्रथम तिथि थी तथा 1950 विक्रमी सम्मत 16 चैत की तिथि थी । उसी रमज़ान मास की 28 वीं तिथि को पूर्ण सूर्य ग्रहण हुआ, वह भी नेचर

के अनुसार 27-28-29 तारीख़ों में दरम्याने दिन को हुआ था।

1. 1894 ई. वाले चन्द्र, सूर्य ग्रहण का चर्चा पत्रिका युग परिवर्तन, लेखक पं. उदय शंकर पत्रिका "गंगा" 1931 ई.।

2. पत्रिका "ब्रह्मन सर्वस्व" इटावा यू.पी. 1930 ई. में मिलता है।

3. महोत्मा सूरदास जी ने अपने भजनों में ऐसे ग्रहण का उल्लेख किया है :-

चन्द्र सूर्य को राहू ग्रसे मृत्यु बहुत पड़े ।
एक हज़ार नौ सौ से ऊपर ऐसा योग पड़े ॥

(सूर सागर) कि 1900 विक्रमी बीत जाने के पीछे सूर्य चान्द को ग्रहण होगा।

4. सिखों के पवित्र ग्रन्थ, आदि से भाटों के सवैये में लिखा है कि :-

"नि:कलंक बजे डंक चढ़ु दल रविन्द्र जियो" कि नि:कलंक श्री कृष्ण जी के अवतार इमाम महदी अलैहिस्सलाम प्रकट होंगे, तो एक जाति दूसरी जाति पर चढ़ाई करेगी, और सूर्य व चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा।

1894 ई. वाले चन्द्र-सूर्य ग्रहणों की तफ़सील इन पुस्तकों आदि में मिलती है।

योग : ज्योतिष में चन्द्रमा की तेरहवीं, आठवीं और तीसरी तिथियों में तीन विशेष नक्षत्रों का एक विशेष राशि में समानअवस्था में इकट्ठे होना योग कहलाता है। (पद्मचन्द्र कोश पृ. नं. 211) ऐसे योग के फलस्वरूप चन्द्र सूर्य ग्रहण होता है। यदि वह विशेष योग परमात्मा के आदेशानुसार प्रकट हो 'तो वह किसी सुधारक अथवा अवतार के प्रादुर्भूत होने पर उसकी सत्यता पर साक्षी बनता है, जैसा कि रमज़ान 1311 हिजरी, 1894 ई. के ग्रहण कलियुग के अवतार की सत्यता के साक्षी थे।

कल्कि अवतार अहमद का जन्म शंभल में

"वह आया मुन्तज़िर थे, जिस के दिन रात ।
मुअम्मा खुल गया रोशन हुई बात ॥"

श्री पं. राज नारायण शास्त्री ने रणबीर महानिबन्ध ज्योतिष शास्त्र को

उपलक्ष में रखते हुए अपनी पुस्तक चेतावनी (उर्दू) में लिखा था कि "(कल्कि अवतार) श्री कृष्ण जी ने मौसम वसंत में सूर्योदय से पहले जन्म लिया है ।"

परमात्मा ने अपार कृपा की, श्री कृष्ण जी महाराज जी के स्वरूप अहमद इमाम महदी, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जन्म मौसम वसंत में 13 फ़रवरी 1835, ई. 14 शव्वाल, 1250 हि. शुक्रवार के शुभ दिन सूर्योदय से पहले सुबह की नमाज़ के मुबारक समय में हुआ । आप का जन्म "चेतावनी" के अनुसार क़ादियान दारुलअमान की शान्तिप्रद पवित्र भूमि में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा महा पंडित (विष्णु यश) के घर हुआ । आपके पिता अपने इलाक़े और क़ादियान के भूपति, सरदार तथा क़ाज़ी (न्यायधीश) थे।

शब्दों की व्याख्या

1. पहले ग्रन्थों में लिखा गया था, कल्कि अवतार गोपाल होगा ।

2. शंभल गाँव में प्रकट होगा ।

3. आप के पिता का नाम वसुदेव न हो कर कलियुग का नाम कोई और (विशणु यश ब्रह्मण) होगा ।

4. माता जी का नाम देवकी जी न होकर कोई दूसरा और नाम होगा।

मानों कलियुग में द्वापर युग के असली कृष्ण जी महाराज तनासुख़ या हलूल अथवा आवागमन द्वारा नहीं होंगे । न ही मथुरा नगर, न वसुदेव जी, न देवकी जी, न क्षत्री कृष्ण जी, न ब्रह्मन होंगे और न गोपियाँ होंगी, न ही ग्वाला न गऊ न गोपाल । अपितु यह सारे नाम अर्थों की दृष्टि से देखे जायेंगे।

गोपाल :- कल्कि अवतार 'अहमद' अलैहिस्सलाम भूपति और जागीरदार होने के नाते गोपाल हैं । आपके घराने में गाय पालने की रीति परम्परा से चली आ रही है । मैंने 1947 ई. में उस सफ़ेद गायें के दर्शन किए, जो हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम के सुपुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़ा सानी के घर में थी । वह उस समय दो किलो दूध दे रही थी । रब्वा में भी आप के पौत्र साहिबज़ादा मिर्ज़ा लुक़मान जी ने उच्च स्तर पर घोड़े गायें आदि जानवर पाल कर अपने गोपाल वंश की परम्परा को जीवित रखा था।

शंभल नगरी क़ादियान

शंभल नगरी के विषय में कल्किपुराण में लिखा हुआ है कि :-

1. ''उस शंभल नगरी में अरसठ (68) तीर्थों का वास होता है ।''

2. ''जिस शंभल नगरी में मरने से कल्कि भगवान का आश्रय (शिफ़ाअत्) पाकर सब पापों का नाश तथा मुक्ति होती है ।''

3. ''अनोखे और विलक्षण प्रकार के फूलों, पुष्पों से भरे हुए जंगलों व बग़ीचों और उपवनों से सुसज्जित, सुन्दर वह संभल मोक्ष का देने वाला है ।''

कल्कि पुराण (उर्दू) भाग नं. 3, अध्याय नं. 13 श्लोक नं. 4,5, पृ. नं. 65, अनुवादक, पं. हर दयाल शर्मा, मेरठ शहर, प्रकाशक, पं. ईश्वरी, प्रसाद, राम चन्द्र, सद्र मेरठ, 1897 ई.।

शंभल कहाँ है ?

पंडित राज नारायन शास्त्री ज्योतिषी ने हिन्दू ग्रन्थों के आधार पर लिखा है कि श्री कृष्ण जी कल्कि अवतार ने संभल गाँव में ब्राह्मन घराने में जन्म लिया है ।'' (चेतावनी उर्दू, 1942 ई.)

कल्कि अवतार श्री कृष्ण जी के स्वरूप अहमद अलैहिस्सलाम हैं । उन के कलियुग में प्रादुर्भूत होने के स्थान शंभल होने पर सभी हिन्दू सहमत हैं, इस पर भी सभी सहमत हैं कि कलियुग का अवतार हिन्दुस्तान में प्रकट होगा, परन्तु शंभल नगरी कहाँ है । इसमें मतभेद पाये जाते हैं ।

1. कुछ विद्वान कहते हैं शंभल नगर, उड़ीसा, हिमालय, पंजाब, बंगाल और शंकरपुर में है ।

2. हरिद्वार, मुरादाबाद यू.पी. में है ।

3. कुछ यह भी कहते हैं कि शंभल, चीन के गोभी मरूस्थल में है, जहाँ मनुष्य नहीं पहुँच सकता ।

4. कुछ यह भी कहते हैं कि वृन्दावन में है । (राहे ईमान, पृ. नं. 9, जनवरी, 2003 ई., क़ादियान, पंजाब, भारत)

महात्मा बालमुकुन्द जी का अनुदेश

दिल्ली के महान् महात्मा बालमुकुन्द जी महाराज ने एक शताब्दी पहले एक इश्तिहार (विज्ञापन) प्रकाशित कराया था । जिसका शीर्षक ''श्री निष्कलंक भगवान् का अवतार'' अपने उस विज्ञापन में महात्मा जी ने नि:कलंक कल्कि अवतार की पहचान और शंभल नगरी के बारे में फैसला करते हुए कहा था :-

''हे सज्जनो ! अगर आप को इस महाकष्ट से छूटने की ख़ाहिश है तो... श्री निष्कलंक जी महाराज का ज़रूर स्मरण व ध्यान कीजिये ।... वह ज़रूर प्रकट होकर हाल में ही उन सब उपद्रवों और दुष्टों को नाश करेंगे ।... प्यारे भगतो ! नरसिंह जी का भाँत भरना पहले भी किसी शास्त्री जी की समझ में नहीं आया था ।''

''...जब नरसिंह जी प्रकट हो चुके, तब ही तो मालूम हुआ... इस सबब से उन कल्कि महाराज का प्रगट होना मानो !... कहाँ पैदा हुए ? बुद्धि वालो ! ग़ौर से सोचो, संभल वहीं है, जहाँ निष्कलंक जी प्रगट हों ।... अक़लमंदो को इशारा ही काफ़ी होता है । अब ईश्वर महाराज से यही प्रार्थना है कि आप जल्दी प्रकट होकर अपने भगतों को बचाओ ।''... अल् मुश्तहर, बाल मुकुन्द जी, कूँचा पाती राय, दिल्ली, मत्बुआ, नज़ामी प्रेस दिल्ली । मन्क़ूल, ततिम्मा, हक़ीक़तुल वह्य, हाशिया पृ. नं. 86, मत्बुआ, 15 मई, 1907 ई, मत्बा, मैगज़ीन क़ादियान, पंजाब, भारत ।

सो संभल से अभिप्राय कोई विशेष नगरी नहीं अपितु संभल वही है जहाँ निष्कलंक जी महाराज प्रकट होंगे ।

कल्कि पुराण, शब्दों की व्याख्या

शंभल :- क़ादियान ही शंभल है :-

क़ादियान का उपनाम है, दारुल् अमान, जिस के अर्थ हैं शान्तिनिकेतन, शान्ति का घर ।

1. शंभल = शंभ + भल । शंभ = शान्ति करना, शान्ति होना ।

वह स्थान, जहाँ शान्ति व अमन हो, वह स्थान, जो शान्ति फैलाने

वाला हो । अर्थात् दारुल् अमन अथवा शान्ति निकेतन ।

हिन्दी उर्दू लुग़ात पृ. नं. 106, साहित्य सदन, राम नगर, बनारस)

2. भल :- कल्याणकारी = कल्याण दायक, अर्थात् शंभल कल्याणकारी और कल्याण दायक स्थान है । जिसका दूसरा नाम अरबी भाषा में दारुल् अमान है ।

3. "वह गाँव जहाँ कल्कि अवतार होगा ।"

पद्म चन्द्र कोष पृ. नं. 448, 449=शब्द शंभल ।

4. भल = दान देना, ख़ैरात करना, ख़ज़ाने लुटाना । पद्म चन्द्र कोष पृ. नं. 355, शब्द भल ।

शंभल तीर्थ स्थान :- कल्कि पुराण में संभल नगरी में अरसठ (68) तीर्थों का वास बताया गया है । कलि युग में केवल संभल ही एक मात्र ऐसा तीर्थ स्थान होग । जो कल्याण **दायक और** शान्ति निकेतन होगा, दूसरे सारे तीर्थ न तो शान्ति दायक होंगे न **ही मुक्तिदायक** ।

तीर्थ के अर्थ :- (क) पवित्र स्थान (ख) दर्शन, ज़्यारत गाह (ग) दिल, मन, हृदय (घ) धरती का पवित्र स्थान, (पद्म चन्द्र कोष, शब्द तीर्थ)। (ङ) घाट, तालाब, पानी का स्थान, अमर जीवन दाता जल (आबे हयात) लोगों के आने जाने का और जमघटे का स्थान । (पद्म चन्द्र कोष)

मानों शंभल वह तीर्थ स्थान है जहाँ श्रद्धालु सदा दर्शनों के लिए आते जाते रहा करेंगे और वहाँ से उन की मुरादें पूरी हाती रहेंगी ।

पहले भी बताया जा चुका है कि दिल्ली के महात्मा **बालमुकुन्द** जी ने अपने विज्ञापन में लिखा था कि :-

सम्भल से अभिप्राय कोई विशेष नगरी नहीं है, सम्भल वही है, जहाँ निष्कलंक जी प्रकट होंगे । (इश्तेहार, श्री निष्कलंक जी भगवान् का अवतार, मुद्रित, निज़ामी प्रेस दिल्ली) ।

शंभल क़ादियान है

बताये गये विवरण को ध्यान में रखते हुए यह सारी बातें और चिन्ह, सारे निशान और सारी बातें क़ादियान दारुल् अमान तथा उसमें जन्म लेने वाले

अहमद पर चरितार्थ होती हैं ।

1. क़ादियान की पवित्र भूमि में श्री कृष्ण जी महाराज के स्वरूप पहले ग्रन्थों के अनुसार अहमद नाम से सम्बन्धित होकर प्रकट हुये हैं ।

2. इसी नगरी, क़ादियान से लाखों, करोड़ों लोगों ने शान्ति और कल्याण प्राप्त किया । अहमद महर्षि की आध्यात्मिक, शान्तिप्रद शिक्षाओं से लाखों लोगों ने अमर जीवन प्राप्त किया ।

3. दान रूप में कोष (ख़ज़ाने) बाँटने के बारे में कल्कि अवतार ने फ़र्माया है :-

"वो ख़ज़ायन जो हज़ारों साल से मद्फ़ून थे ।
अब मैं देता हूँ अगर कोई मिले उम्मीद वार ॥"

(बराहीन अहमदिय्या, भाग नं. 5, पृ. नं. 97 मुद्रित 1908 ई.)

ये आध्यात्मिक कोष कल्कि अवतार अहमद की ओर से बाँटे गये । तब से जमाअत अहमदिय्या बाँटती चली आ रही है ।

★ इस के अतिरिक्त जमाअत अहमदिय्या हरेक देश में पूरे तन, मन धन से असहाय, दीन दुःखियों और हाजत मंदों, अनाथों, विधवाओं, रोगियों एवं विद्यार्थियों की सेवा में जुटी हुई है ।

★ कल्कि अवतार हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद(र) ने "मर्यम शादी फंड" की स्थापना की है । इस धन राशि से असहाय, निर्धन माता पिता की कन्याओं के विवाह किये जाते हैं । जिस से समाज में उन कन्याओं का वक़ार और प्रतिष्ठा बनी रहती है तथा निराश माता पिता को शान्ति व सकून मिलता है । ऐसे विवाहों में धर्म जाति, रंग, रूप, छूत, अछूत, का भेद-भाव नहीं किया जाता है ।

★ जमाअत् अहमदिय्या की ओर से हिन्दू विधवाएँ और अनाथ स्त्रियाँ मासिक वज़ीफ़ा पाती आ रही हैं । मैंने ऐसा अपनी आँखों से 1956 ई. में भी देखा था । भूकंप पीड़तों बाढ़ ग्रस्त लोगों तथा आपातकाल आदि में जमाअत अहमदिय्या अपना तन, मन, धन, न्यौछावर करने में सब से आगे है ।

विष्णु यश

1. कल्कि पुराण और चेतावनी आदि ग्रन्थों में कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णु यश लिखा है, क्योंकि उस समय किसी ब्राह्मण के घर एक बेटा उत्पन्न हो गया था, अतः उसी को कल्कि अवतार घोषित कर दिया गया। चेतावनी 1942 ई. के प्रकाशित होने से लेकर आज 2004 ई. तक उस अवतार का नाम व निशान नहीं मिलता।

2. ऐसा ही संभल (मुरादाबाद, यू.पी) में 20वीं शताब्दी के आरंभ में एक ब्राह्मण जोड़ा वसुदेव और देवकी नामक आकर इस आशा से आबाद हो गया था कि उनके हाँ कल्कि अवतार कृष्ण बेटा पैदा होगा; परन्तु वह जोड़ा सारी आयु बाँझ रहा, उनके यहाँ कोई औलाद बेटा-बेटी पैदा नहीं हुई। कल्कि अवतार के आने का ज़माना बीत गया, बताओ कल्कि अवतार कहाँ है ?

कल्कि अवतार

कलियुग के अवतार हज़रत अहमद का क़ादियान में प्रादुर्भाव हो चुका है। आपके पिता का शुभ नाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा था। पहले ग्रन्थों में कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश लिखा है। यह नाम न तो द्वापर युग के कृष्ण के पिता वासुदेव का है और न ही कलियुग के कृष्ण-स्वरूप अहमद के पिता का।

विष्णु यश :- विष्णु, यश, गुण वाचक संज्ञा है। जो अपने अर्थो और गुणों के उपलक्ष में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा पर चरितार्थ होती है।

विष्णु+यश=विष्णुयश

विष्णु=परमेश्वर, सर्व व्यापक ईश, जो सब स्थानों में मौजूद है। ब्रह्माण्ड का पैदा करने वाला, सृष्टा।

यश = स्तुति, हम्द व सना। स्तुति करने वाला, प्रशंसा, प्रशंसा करने वाला।

यहाँ यह शब्द मनुष्य के लिये बोला गया है, इसका अर्थ यह होगा कि ऐसा व्यक्ति, जो सर्व व्यापक, हरेक स्थान में मौजूद परमात्मा की स्तुति एवं

प्रशंसा करने वाला । सबका भला करने वाला । सबका हार्दिक हितैषी। यह सारे भाववाचक अर्थ मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा पर चरितार्थ होते हैं।

ब्राह्मण, जो वेद, पुराण (क़ुर्आन) और शुद्ध परम चैतन्य को जानता हो।'' (पद्म चन्द्र कोष, शब्द ब्रह्मन, पृ. नं. 204, 350)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा जी एक प्रसिद्ध जाने माने चिकित्सक, धनवन्तरि, विद्वान, अनेक भाषाओं के भाषा विज्ञ और प्रकाण्ड पंडित थे । आप धार्मिक ग्रन्थों के आचार्य थे । ईश भक्त तथा प्राणी मात्र के हार्दिक हितैषी थे। क़ुर्आन मजीद के गूढ़ रहस्यों और तथ्यों के पूर्णतः ज्ञानी थे । सो आप ही अपने समय के विष्णु यश, आचार्य तथा ब्रह्म लीन महात्मा थे एवं अपने समय में स्तुति के एकमात्र पात्र थे । आपके दरबार में क़ुर्आन के हाफ़िज़, (कंठस्थी) रहा करते थे । संकड़ों ही दीन, धर्म का प्रचार करने, मुसलमानों की तालीम व तरबियत, शिक्षा दीक्षा करने के लिये मौजूद रहा करते थे । इस प्रकार आप हरेक स्थान में मौजूद, सर्व व्यापक ब्रह्म की स्तुति करने वाले, दान दक्षिणा करने और निरीह, असहाय, व्यक्तियों के अन्न दाता, एवं सेवक थे । विवणार्थ देखिये जमाअत अहमदिया का इतिहास।''

क़ादियान तीर्थ स्थान = संभल

1. क़दियान ही तीर्थ स्थान है । शंभल नगरी है, क्योंकि इस पवित्र नगरी में श्री कृष्ण जी महाराज के स्वरूप कल्कि अवतार हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव हुआ है । (अथर्व वेद, 20:115:1) अवतार के प्रकटन स्थान होने के कारण क़ादियान पवित्र तीर्थ स्थान और दर्शनीय ज़ियारत गाह बन गया है । सैद्धान्तिक रूप में जहाँ ईश अवतार का प्रादुर्भाव होता है । वह स्थान तीर्थ स्थान बन जाता है । जैसे मुसलमानों का तीर्थ स्थान मक्का मुअज़्ज़मा, जो महर्षि नराशंस मुहम्मद मुस्तफ़ा के प्रादुर्भूत से पवित्र दर्शन स्थली, व तीर्थ स्थान बन गया, जैसा कि महात्मा बाल मुकुन्द जी कूचा पाति राम, दरियागंज, दिल्ली, एक शताब्दी पूर्व लिख चुके हैं।

2. क़ादियान इसलिए भी तीर्थ स्थान है कि इसमें हज़रत 'कृष्ण अहमद' अलैहिस्सलाम ने इस क़ादियान में बहिश्ती मक़बरा (स्वर्ग पुरी) नाम

से क़ब्रस्तान की स्थापना की । उस क़ब्रस्तान में दफ़न होने वाला कल्कि अवतार हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम का आर्शीवाद व शफ़ाअत् और आश्रय पा कर निःसंदेह ही 'मूसी' फ़लाह व मोक्ष को प्राप्त कर लेता है; परन्तु ऐसा नहीं कि बहिश्ती मक़बरे की मिट्टी उसमें दफ़न होने वाले को स्वर्गीय बना देती है, अपितु प्रत्येक संयमी, मुत्तक़ी जो वसीयत की शर्तों का दिल से पालन करता है, वस्तुतः वही उसमें दफ़न होगा । कल्कि अवतार अहमद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"पस जो शख़्स मुझसे सच्ची बैअत करता है और सच्चे दिल से मेरा पैरो बनता है और मेरी इताअत में महव होकर अपने तमाम इरादों को छोड़ता है, वही है जो इन आफ़त के दिनों में मेरी रुह उसकी शफ़ाअत करेगी।" (किश्ती नूह सफ़ा 14 तबाअ अव्वल)

क्योंकि हज़रत अहमद के आशीर्वाद से लोगों के सारे पापों का सर्वनाश हो जाता है, अतः इसी संभल नगरी में अरसठ तीर्थों का वास है ।

(कल्कि पुराण 1:13)

हज़रत कृष्ण अहमद अलैहिस्सलाम कल्कि अवतार के प्रादुर्भाव से क़ादियान की काया पलट हो गयी है । अब क़ादियान की पवित्र धरती वृक्ष उगाती है । भारत भर में पैदा होने वाले सभी प्रकार के पेड़ यहाँ पाये जाते हैं। जैसे हरेक प्रकार के आम, नारंगी, माल्टा, संतरा, लीची, किन्नु, सेब, अनार, खजूर, अखरोट, करूंज, रबर, सफ़ेदा, पापुलर, वन, अमरूद, नाशपाती, अनार, केला, ख़ैर, शाल, चीड़, ब्यार, परतल, ख़ुर्मानी, कीकर (बबूल) जामुन, शीशम, तूत, शहतूत, अंगूर, आदि । हरेक प्रकार के फूल पुष्प, गुलाब, चमेली, मोगरा, रात की रानी, मोतिया, सुमन, सुंबल, सूरजमुखी, केसर, गुले दाऊदी, चम्पा, गेन्दा ।

इसके अतिरिक्त गेहूँ धान, बास्मती, परमल, चने, मसूर, बाजरा, चरी, चीना, तिल, तिल्हन, सरसों, मटर, तोरिया, आलू, गोभी, गाजर, मूली, शकरगंदी, मूँगफली, मूँग, मोठ, माश, अरहर, और हर क़िस्म के चौपाये आदि से क़ादियान सुसज्जित है ।

हज़रत कल्कि अवतार 'अहमद' अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव से पहले यह

धरती झाऊ, पपोली सरकंडे, दब खास, काँटे दार झाड़ियाँ, भख्डा, काँटे दार बबूल, अति कड़वा फल तुमाँ, आदि उगाया करती थी ।

"आजकल बाहर से आने वाले लोग सहसा ही पुकार उठते हैं कि "क़ादियान एक सुन्दर बाग़ की तरह है ।"

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में क़ादियाँ (शंभल) नगरी की पहचान के विषय में ऐसी भविष्य वाणी पहले से ही लिखी हुई मौजूद हैं । देखिये कल्कि पुराण अध्याय नं. 1 श्लोक नं. 47 से लेकर 50 तक । अनुवादक श्रीराम, शर्मा, आचार्य, तपोभगवती बरेली यू.पी. भारत ।

शान्ति निकेतन, दारुल अमान

(i) पहले धर्म ग्रन्थों में यह भविष्यवाणी लिखी हुई है कि क़ादियान, संभल नगर ऐसा स्थान है कि जहाँ शान्ति हो और वह शान्ति दायक स्थान हो तथा वहाँ से लोगों की मुरादें पूरी होती हों ।

(ii) कल्कि अवतार हज़रत कृष्ण अहमद अलैहिस्सलाम के 'प्रादुर्भाव से लेकर आज तक लाखों करोड़ों नर नारियों ने क़ादियान से अपनी मुरादें पाई हैं । लाखों विद्यार्थियों ने विद्याप्राप्त की । लाखों ने धार्मिक और वैज्ञानिक आदि सभी प्रकार की शिक्षा पाई । आपके अनुयायियों में से ही श्री अब्दुस्सलाम जैसे अहमदी नोबल प्राइज़ पाने वाले व्यक्ति पैदा हुए हैं ।

क़ादियान संभल नगरी है, इसका दूसरा उपनाम दारुल् अमान अर्थात् शान्ति निकेतन है ।

कल्कि अवतार हज़रत कृष्ण अहमद अलैहिस्सलाम को तीनों बुनियादी वेदों, ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद 20-115:1 में अपने रुहानी, आध्यात्मिक पिता वैश्वानर, जगतगुरू अवतार शिरोमणि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ऐसी शरीअत् पाने का पहले से वृतान्त चला आ रहा है ।

पवित्र क़ुर्आन मजीद की शिक्षायें (1) विश्व व्यापि (2) सार गर्भित (3) मानव समाज की महाप्रलय तक समस्त आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली मनमोहक शिक्षायें हैं ।

क़ुर्आन मजीद का अपने से पहले, प्राचीन कालीन धर्मों पर बहुत बड़ा परोपकार व एहसान है कि उसने उन धर्मों के ऐसे तथ्यों को सुरक्षित किया है, जो पुराने समय में अवतारों द्वारा उतारे गये थे।

है मुसद्दिक़ शराये साबिक़ा ।
फ़ीहा कुतुबुन् क़य्येमा ॥

(सूरः बय्यना, आयत नं. 3, 4)

क़ुर्आन मजीद में दूसरी प्रकार की वे शिक्षाएँ हैं, जो ऐसे तथ्यों पर आधारित हैं जो संसार के सभी धर्मों में दुर्लभ हैं ।

क़ुर्आन और वेद

क़ुर्आन पाक में वेद मुकद्दस के जिन तथ्यों को सुरक्षित रखा गया है उन में से कुछेक, परन्तु पहले एक स्पष्टीकरण ।

पहले कहा जा चुका है कि कल्कि अवतार अहमद का नाम वेदों में व्यक्ति वाचक संज्ञा के रूप में 'अहमद' आता है, परन्तु अथर्ववेद काँड नं. 20, सूक्त नं. 127 मन्त्र नं. 4-5 में गुणवाचक संज्ञा रेभ-प्रेम भी आया है। रेभ और प्रेम के अर्थ हैं ।

1. 'स्तुतः' स्तुति करता, (निघण्टु 3:16)

2. स्तुति करने वाला' अनुवादक प्र. राजाराम, लाहौर ।

3. 'सना ख़्वाँ, अर्थात् स्तुतः । प्रैक्टीकल, डिक्शनरी, संत सिंह ऐण्ड सन्ज़, चौक मति, लाहौर 10 वाँ एडीशन, 1945 ई. ।

अरबी भाषा में स्तुतः = सनाख़्वाँ को अहमद कहा जाता है । रेभ, प्रेम अहमद, अर्थात् परमात्मा की स्तुति करने वाला। वेदों में अहमद मुनि को एक ऐसे सदाबहार 'शजरा तय्यबा' 'वृक्ष' के बारे में प्रचार करने का आदेश दिया गया है।

अहमद प्रचार कर, क़ुर्आन और वेद

परमात्मा ने क़ुर्आन मजीद में 'कलेमतन् तय्येबतन्' एक पवित्र कलाम को 'शजरतिन्' तय्यबतिन् से उपमा दी है । जिसकी जड़ प्रौढ़ता से क़ायम

है। वह वृक्ष अपने रब्ब के आदेशानुसार हर समय अपने (ताज़ा) फल देता है तथा अल्लाह आवश्यकतानुसार सारी बातें बताता है, ताकि लोग शिक्षा प्राप्त करें। (सूरः इब्राहीम आयत नं. 25 व 26)

पवित्र वेदों में रेभ, अहमद को सदा बहार वृक्ष के बारे में प्रचार करने का आदेश दिया गया है । यथा :-

1. **अथर्ववेद**, काँड नं. 20, सूक्त नं. 127, मन्त्र नं. 4,

''वच्यास्व रेभ वच्यस्व'' ।

हे, स्तुति करने वाले (अहमद) प्रचार कर ! प्रचार कर !

कुर्आन, सूरः अलमायदा : 'या अय्युहर्रसूल बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैक, है (अहमद) रसूल ! जो तेरी ओर परमात्मा ने कलाम (तथ्य) उतारा है, उस का प्रचार कर, यदि तू ने ऐसा न किया तो मानो तूने उस सन्देश को बिल्कुल नहीं पहुँचाया ।

अथर्ववेद 20-127, 4 : 'वृक्षे', वह वृक्ष, जिससे अच्छे और उत्तम प्रकार के फूल, फल प्राप्त होते हैं । वह वृक्ष जो काटे जाने पर भी पैदा हो जाता है । fully developed पूर्ण रूपेण प्रफुल्लित वृक्ष ।

सूरः इब्राहीम, 25:26 : 'शजरतिन् तय्येबतिन्' 'पवित्र वृक्ष, जिस की जड़ प्रौढ़ता से क़ायम है तथा उस की हरेक शाखा आकाश तक पहुँची हुई है अर्थात् सदा सर्वदा क़ायम रहने वाला वृक्ष ।

अथर्ववेद 20-127:4 : 'वृक्षे पकवे' गद्दर, पक्के फलों वाला, सदा (ताज़ा) फल देने वाला, सुन्दर वृक्ष ।

सूरः इब्राहीम 25, 26 ।

''तुऽती उकुलहा कुल्ला हीनिन् बिइज़्ने रब्बेहा'' वह वृक्ष हर समय अपने रब्ब के अनुदेश से अपना ताज़ा फल देता है ।

अथर्ववेद 20-127:4 : 'शकुन' बुरे तथा भले में पहचान कराने का साधन, निमित, माध्यम, ज़रिय्या ।

सुरः फ़ुर्कान आयत नं. 2 ।

'नज़्ज़लल फ़ुर्क़ाना अलाअब्देही'' बरकत वाली है वह सत्ता, जिस ने अपने भक्त (बंदे मुहम्मद) पर फ़ुर्क़ान उतारा ।''

फ़ुर्क़ान :- हक़ व बातिल, सत्य व झूठ, बुरे तथा भले, में तमीज़ कराने, पहचान व अन्तर स्पष्टीकरण कराने का साधन ।

क़ुर्आन मजीद फ़रमाता है ''फ़ीहा कुतुबुन् क़य्येमः'' कि उसमें पहले अवतारों द्वारा उतारे गये तथ्यों को, जो महाप्रलय तक क़ायम रहने वाले थे, सुरक्षित रखा गया है और वेदों व क़ुर्आन में उन्हीं तथ्यों के प्रचार करने का आदेश दिया गया है । हिन्दुओं के किसी धर्म ग्रन्थ और शास्त्र में अहमद को मूर्ति पूजा का आदेश नहीं दिया गया ।

हिन्दू क़ौम का महत्व

कृपालु, दयालु परमात्मा ने संसार भर की जातियों, धर्मों तथा लोगों पर अपार कृपा करते हुए अपना नूर भारत में उतारा, जो कल्कि अवतार अहमद अलैहिस्सलाम के रूप में ज्योतिर्मान है । ताकि सब लोग उस आख़िरी नूर, इमाम महदी अलैहिस्सलाम के वसीला व नमित द्वारा अपने जीवन के उद्देश्य 'वसले इलाही' को पा सकें। विशेषकर हिन्दु स्थान की हिन्दू जाति को विश्व भर की सभी जातियों का शिरोमणि और सुधारक बनाने के लिए यहाँ भेजा है।

श्रीमान् शम्स उस्मानी रामपुरी (यू.पी)

इस सम्बन्ध में श्री उस्मानी जी रामपुरी यू.पी. लिखते हैं :-

उम्मियों के क़ुर्आन ने दो गिरोह बताये हैं... । एक पहला गिरोह जो चौदह सौ साल पहले अरब (देश) में था... और एक बाद में आने वाला 'आख़िरीन' गिरोह ।

सूरः जुमः आयत नं. 2, 3 । ''यही बाद वाला गिरोह है... अहादीस ने जिसकी तश्रीह या व्याख्या करते हुए हिन्दुस्तान की हिन्दु क़ौम की ओर संकेत किया है ।'' (अहमद, दारमी, रज़ीन, बहक़ी, बहवाला मिश्कात, बाब सवाब हाज़ि हिल् उम्मत । ('अब भी अगर न जागे तो... पृ. नं. 98)

हिन्दु जाति के महत्व को उजागर करते हुए उस्मानी जी लिखते हैं :- ''हिन्दु कौम इस (मुस्लिम) उम्मत का दूसरा भाग अर्थात् आख़िरीन हैं । यह

हिन्दु क़ौम बहैसियत मजमूई इस्लाम क़बूल कर लेगी और उस वक़्त संसार की इमामत के मनसब (पद) पर सरफ़राज़ होगी ।''

(अब भी अगर न जागे तो... पृ. नं. 98)

कल्कि अवतार का आह्वाहन

पहले बताया जा चुका है कि ''मुस्लेह आख़िर ज़मान्'' 'कल्कि अवतार' अहमद नाम से हिन्दुस्तान में प्रकट होगा । वह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आध्यात्मिक पुत्र होगा । वह अपने पिता से विश्वव्यापि, सारगर्भित सत्यज्ञान, क़यामत तक क़ायम रहने वाली शरीअत् पूरी तरह से, पूरी हिम्मत से पायेगा । वह सारे संसार के लोगों को एक जाति का रूप देगा और Love for all, Hatred for none के द्वारा सारे संसार के लोगों का शान्तिमय पवित्र समाज विश्वव्यापि भाईचारा स्थापित करेगा । जिनका एक अल्लाह एक ही क़िब्ला (काबा) एक ही क़ुर्आन, एक ही पेशवा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम होगा। उसकी पहचान का बड़ा निशान यह है कि वह ईरानी वंशज, फ़ारसी-उल-असल, भारत में पैदा होगा।

सो वह परमात्मा के आदेशानुसार क़ादियाँ की पवित्र भूमि में 1835 ई. में प्रकट हुआ और क़ौम को सम्बोधित करते हुये फ़रमाया :-

''क़ौम के लोगो इधर आओ कि निकला आफ़ताब ।
वादिए ज़ुल्मत में क्या बैठे हो, तुम लैलो निहार ।।
तिश्ना बैठे हो किनारे, जुए शीरीं हैफ़ है ।
सर ज़मीने हिन्द में **चलती** है नहरे ख़ुश्गवार ।।''

(दुर्रे समीन उर्दू) कल्कि अवतार अहमद, अलैहिस्सलाम)

कल्कि अवतार ने फ़रमाया

1. ''मैं वह इमाम हूँ, जिसे स्वीकार करना मुसलमानों, इसाइयों, हिन्दुओं और सारे भक्तों, साधु, संतों के लिए अनिवार्य ठहराया गया है । सो इस समय मैं बेधड़क कहता हूँ कि परमात्मा की कृपा से वह इमामुज़्ज़मान मैं

हूँ। परमात्मा ने मुझे क़ुर्आन शरीफ़ के मुअज़ज़ा के तौर पर अरबी बलाग़त् व फ़साहत का निशान दिया है।''

2. ''मुझे क़ुर्आन शरीफ़ के हक़ायक़ व मुआरिफ़ का निशान प्रदान किया गया है।''

3. ''मैं कसरते क़बूलिय्यते दुआ का निशान दिया गया हूँ कोई नहीं, जो इस मैदान में मेरा मुक़ाबला कर सके।''

4. ''मैं हल्फ़न् कह सकता हूँ कि मेरी तीस हज़ार के क़रीब दुआयें क़बूल हो चुकी हैं और उनका मेरे पास सबूत है।''

5. ''मैं ग़ैबी अख़बार का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं जो उस का मुक़ाबला कर सके।''

(ज़रूरतुल् इमाम, पृ. नं. 43, 44, मत्बुआ 1977, क़ादियान)

कृष्ण (स्वरूप) होने का एलान

इससे पहले बयान हो चुका है कि मुस्लेह आख़िर ज़मान् कल्कि अवतार कृष्ण जी का स्वरूप इमाम महदी अलैहिस्सलाम फ़ारसी वंशज अहमद नाम से भारत में प्रकट होगा।

चुनाँचि 2 नवम्बर 1904 ई. को सियालकोट शहर में एक बहुत बड़े जलसे में आपने यह घोषणा की कि :-

1. ''अब वाज़ेह हो कि राजा कृष्ण जैसा कि मेरे पर ज़ाहिर किया गया है, दरहक़ीक़त एक ऐसा कामिल इन्सान था, जिसकी नज़ीर (उपमा) हिन्दुओं के किसी ऋषि और अवतार में नहीं पाई जाती। वह अपने वक़्त का अवतार यानी नबी था, जिस पर ख़ुदा की तरफ़ से रूहुल् क़ुदुस उतरता था, वह ख़ुदा की तरफ़ से फ़ताहमन्द और बा इक़बाल था जिसने आर्या वर्त (भारत) की ज़मीन को पापों से साफ़ किया। वह अपने ज़माने का दरहक़ीक़त नबी था। जिसकी तालीम को पीछे से बहुत बातों में बिगाड़ दिया गया।''

''ख़ुदा का वादा था कि आख़िरी ज़माना में उसका बरूज़ यानी अवतार पैदा करे, सो यह वादा मेरे ज़हूर से पूरा हुआ।''

...''सो मैं कृष्ण से मुहब्बत करता हूँ; क्योंकि मैं उसका मज़्हर

(स्वरूप) हूँ और इस जगह एक और राज़ दरम्यान में है कि जो सिफ़ात कृष्ण की तरफ़ मन्सूब किये गये हैं, यानी पाप का नष्ट करने वाला और ग़रीबों की दिलजोई करने वाला और उनको पालने वाला, यही सिफ़ात मसीह मौऊद के हैं। पस गोया रुहानियात की रू से कृष्ण और मसीह मौऊद एक ही हैं, सिर्फ़ क़ौमी इस्तलाह में तग़ायर है।''

(लैक्चर सियालकोट, पृ. नं. 23, 2 नवम्बर 1904 ई.)

''मेरा इस ज़माना में ख़ुदा की तरफ़ से आना महज़ मुसलमानों की इस्लाह के लिए ही नहीं, बल्कि मुसलमानों हिन्दुओं और इसाइयों तीनों क़ौमों की इस्लाह मन्ज़ूर है और जैसा कि ख़ुदा ने मुझे मुसलमानों और इसाइयों के लिये मसीह मौऊद करके भेजा है, ऐसा ही मैं हिन्दुओं के लिये बतौर अवतार के हूँ... मैं उन गुनाहों के दूर करने के लिए' जिनसे ज़मीन पुर हो गई है, जैसा कि मसीह इब्ने मर्यम के रंग में हूँ, ऐसा ही राजा कृष्ण के रंग में भी हूँ, जो हिन्दु धर्म के अवतारों में से एक बड़ा अवतार था, या यूँ समझना चाहिये कि रूहानी हक़ीक़त की रू से मैं वही हूँ।''

''मुझे यह साफ़ लफ़्ज़ों में फरमाया गया है कि फिर हिन्दु मज़हब का इस्लाम की ज़ोर के साथ रूजूअ होगा। अभी वे बच्चे हैं। उन्हें मालूम नहीं कि एक हस्ती क़ादिर-मुतलक़ मौजूद है, मगर वह वक़्त आता है कि उनकी आँखें खुलेंगी और वे ज़िंदा ख़ुदा को उसके अजायबात के साथ बजुज़ इस्लाम के किसी जगह नहीं पायेंगी।'' (मजमुआ इश्तिहारात, जिल्द नं. 2, पृ. नं. 341)

''आर्या व्रत के मुहक़्क़िक़ पण्डित, श्री कृष्ण अवतार का ज़माना यही क़रार देते हैं और इस ज़माना में उसके आने के मुन्तज़िर हैं।... वे लोग अभी मुझे शिनाख़्त नहीं करते, मगर वह ज़माना आता है... कि वे मुझे शिनाख़्त करेंगे, क्योंकि ख़ुदा का हाथ उन्हें दिखायेगा कि आने वाला यही है।''

(हक़ीक़तुल् वही रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द नं. 2, पृ. नं. 522, 523)

''दो दफ़ा हमने रुया में देखा कि बहुत से हिन्दु हमारे आगे सजदा की तरह झुकते और कहते हैं कि यह अवतार हैं और कृष्ण हैं और हमारे आगे नज़रें देते हैं।'' (अख़बार अल्हकम, 24 अप्रैल 1902 ई., अहमदिय्या गज़ट, कैनेडा, नवम्बर, दिसम्बर 2003 ई. जिल्द नं. 32, शुमारा नं. 11, 12, पृ. नं. 47-48)

अपील

हे बुद्धिमानो ! कल्कि अवतार अहमद अलैहिस्सलाम के द्वारा सच्चे धर्म का ग़ल्बा मुक़द्दर हो चुका है । अपने महानुभावों, सुधारकों और अवतारों तथा अपने इतिहास पर विचार करें । हज़रत अहमद, ब्राह्मन अवतार से मुक़ाबला करने की बजाय सत्यपथ को अपना लेना बुद्धिमत्ता है ।

1. भारत के षोडष कला पूर्ण अवतार श्री कृष्ण जी महाराज ने अपने जीवन और भगवत गीता का सारांश गीत के अन्तिम अध्याय 18 के अन्तिग श्लोकों में दिया है ।

उन्होंने हिन्दु जाति को साग्रह फ़रमाया है कि :-

सर्व धर्मा न्परिन्यज्म मामेकं शरणं ब्रज ।

(श्रीमद भगवत गीता अध्याय नं. 18, श्लोक नं. 66)

अर्थात् तुम सारे धर्म, मत-मन्त्रों को छोड़कर मेरी शरण में आओ, मैं तुमको सारे पापों से पार कर दूँगा ।

सो हे हिन्दु भाइयों कलियुग के कृष्ण अवतार कृष्ण अहमद के चरणों में आओ तथा मोक्ष और निजात पा लो ।

2. पं. राज नारायन प्रसिद्ध ज्योतिषी :- भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषी पं. राजनारायन शास्त्री, जिन्होंने खुल्लम खुल्ला कहा था कि कल्कि अवतार का प्रादुर्भाव हो चुका है, वह बड़े विश्वास से कहते हैं कि :-

''हे हिन्दुस्तान वालो ! तुम्हारी आँख खुली क नहीं खुली । नींद भरी कि नहीं भरी, सोच कर उठो ! दुनिया नाश के पर्दे में जाने को तैयार है, जो कुछ करना है, आज ही कर लो । (चेतावनी (उर्दू) 1942 ई. पृ. नं. 96 गुड़गाँवाँ, पंजाब, भारत)

3. प्रताप पत्र जालन्धर ने लोगों को जागृत करते हुये लिखा था कि :-

''ऐसा न हो कि दुर्योधन और उसके संघी-साथियों, हामियों, तथा उसकी ख़ातिर जंग करने वालों की तरह आप भी कृष्ण जी (के स्वरूप) को न पहचान सकें ।'' (दैनिक समाचर पत्र प्रताप, जालन्धर, 30, अगस्त 1964 ई.) ।

4. ऐसा ही 'महात्मा बालमुकुन्द जी' दरिया गंज, दिल्ली ने हिन्दु जाति से इल्तमास की है ।

'अपने शास्त्रों के सच्चे तजरबे को सच्ची प्रीति से प्रतीत करो ।

परमात्मा में प्रेम व भक्ति बढ़ाने की ख़्वाहिश है, तो श्री निष्कलंक जी को श्रद्धा से याद करो ।" इसका विवरण पहले हो चुका है।

5. 'ब्रह्मन सर्वस्व' इटावा यू.पी. भारत ।

यह पत्रिका सारी आयु श्री कृष्ण जी महाराज की सेवा करता रहा है, और उनके कलियुग में प्रादुर्भाव के विषय में खुलकर लिखता रहा है कि :

"अवतारों का निर्दिष्ट फल उनके वक़्त में ही नहीं मिल जाया करते । वे बीज बोकर चले जाया करते हैं, जो बाद में फल-फूल कर एक नज़र फ़रेब शक्ल धार लेता है । मौसम गर्मा की शिद्दत के तुरन्त बाद ही बहार का मौसम नहीं आ जाया करता..." ब्रह्मन सर्वस्व पृ. नं. 80, जनवरी 1930 ई. इटावा. यू.पी. भारत ।

कल्कि अवतार हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति के लोगों को सावधान करते हुये फ़रमाया है कि :-

"मैं तो एक तुख़्म रेज़ी करने आया था, सो वह तुख़्म मेरे हाथ से बोया गया । ख़ुदा फ़रमाता हैं कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा तथा हरेक तरफ़ से उसकी शाख़ें निकलेंगी, और एक बड़ा दरख़्त हो जायेगा । पस मुबारक है वह, जो ख़ुदा की बात पर ईमान रखे और दरम्यान में आने वाले इब्तलाओं से न डरे ।" (अल्-वसिय्यत पृ. नं. 20)

आख़िरी अवतार, आख़िरी नूर

युगों के हिसाब से युगों का अन्तिम चरण कलियुग है । इसके बीत जाने पर महाप्रलय का आगमन माना जाता है । सो कल्कि अवतार परमात्मा का आख़िरी अवतार, आख़िरी नूर तथा आख़िरी मुक्तिपथ व मोक्ष की आख़िरी राह है।

पंजाब के मशहूर ज्योतिषी राजनारायण जी भी यही कहते हैं कि :-

"आख़िरी अवतार श्री कल्कि जी हैं । अगली चतुर्युगी की धर्म मर्यादा श्री कल्कि जी बाँधेंगे... नया सम्मत चलेगा ।"

(चेतावनी (उर्दू) 1942 ई. पृ. नं. 109, गुड़गाँवाँ, पंजाब, भारत)

आख़िरी मुक्ति मार्ग

कलियुग के अवतार इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को हार्दिक सहानुभूति से फ़रमाया है कि :

1. "मुबारक वह, जिस ने मुझे पहचाना मैं खुदा की राहों में से आख़िरी राह हूँ और मैं उस के नूरों में से आख़िरी नूर हूँ। बदक़िस्मत है वह जो मुझे छोड़ता है, क्योंकि मेरे बग़ैर सब तारीकी है।" (कश्ती नूह पृ. नं. 56)।

यह एक अनोखा संयोग है कि जो जो बातें हिन्दुओं के ग्रन्थों में पहले से लिखी हुई थीं वे सारी कल्कि अवतार अहमद के हकक़ में पूरी हो रही है।

2. श्री राजनारायन जी ज्योतिषी शास्त्री की यह बात भी पूरी हो चुकी है कि कल्कि अवतार के प्रादुर्भाव पर उसकी ओर से नया सम्वत् चलेगा।

जमाअत् अहमदिय्या की ओर से संसार के संवत में एक नये संवत हिजरी शम्सी की वृद्धि हुई है, जो आजकल 1384 हिजरी शमसी (2005 ई.) चल रहा है। सऊदिया आदि अरब देशों ने उसे यथैव ही अपना लिया है।

देश-बन्धुओं के नाम

कल्कि अवतार इमाम महदी अहमद अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव हो चुका है। उसके आने से उम्मते -मुहम्मदिय्या का दूसरा हिस्सा आख़िरीन (सूरः जुमः आयत 3-4) अर्थात् हिन्दु जाति हक़ीक़ी इस्लाम, अहमदिय्यत में प्रवेश करेगा तथा उस काल में हिन्दु वंशज मुस्लिम जाति सारे संसार की बादशाहत तथा आध्यात्मिक इमामत, व अगुवाई (पौरोहिताई) के उच्च पद पर समन्वित व सुशोभित होगी। यह सत्कार व सम्मान हिन्दु वंशजों के ज़ोर-बाज़ू से नहीं मिलेगा, अपितु यह परमात्मा की देन है, वह जिसे चाहता है, उसे समन्वित करता है तथा जिसकी करतूतों के कारण चाहता है, उसे ज़लील, व ख़्वार करता है।

हे मेरे बुज़ुर्गो ! भाइयो और प्यारे अज़ीज़ो, मैंने सच्चाई आपके सामने खोल कर रख दी है। ताकि आप कल्कि अवतार की तरफ़ रूजूअ करें और अपने जीवन के उद्देश्य, परमात्मा में तल्लीनता को कल्कि अवतार के वसीला से पा लें।

"हमें कुछ कीं[1] नहीं भाइयो, नसीहत् है ग़रीबाना।
कोई जो पाक दिल होवे, दिलो जाँ उस पे क़ुर्बां है॥"